ಕರ್ನಾಟಕ ರಾಜ್ಯ ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ
ಮಾನಸಗಂಗೋತ್ರಿ, ಮೈಸೂರು – ೫೭೦ ೦೦೬.

Karnataka State Open University
Manasagangothri, Mysore - 570 006.

हिन्दी साहित्य का इतिहास और व्याकरण

M. A. Previous HINDI
Course / Paper - IV

व्याकरण

वर्ण विचार
संधि और समास
शब्द–भेद
संज्ञा, वचन और लिंग
कारक और सर्वनाम
विशेषण
संबंध सूचक, समुच्चय बोधक एवं विस्मयादिबोधक
क्रिया
संयुक्त क्रिया
अर्थ – कृदंत और तद्धित
वाच्य
उपसर्ग और प्रत्यय
क्रिया विशेषण
वाक्य विचार

BLOCK - 7

ಉನ್ನತ ಶಿಕ್ಷಣಕ್ಕಾಗಿ ಇರುವ ಅವಕಾಶಗಳನ್ನು ಹೆಚ್ಚಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮತ್ತು ಶಿಕ್ಷಣವನ್ನು ಪ್ರಜಾತಂತ್ರೀಕರಿಸುವುದಕ್ಕೆ ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯ ವ್ಯವಸ್ಥೆಯನ್ನು ಆರಂಭಿಸಲಾಗಿದೆ.

ರಾಷ್ಟ್ರೀಯ ಶಿಕ್ಷಣ ನೀತಿ **1986**

ಮುಕ್ತ ವಿಶ್ವವಿದ್ಯಾನಿಲಯವು ದೂರಶಿಕ್ಷಣ ಪದ್ಧತಿಯಲ್ಲಿ ಬಹುಮಾಧ್ಯಮಗಳನ್ನು ಉಪಯೋಗಿಸುತ್ತದೆ. ..... ವಿದ್ಯಾಕಾಂಕ್ಷಿಗಳನ್ನು ಜ್ಞಾನ ಸಂಪಾದನೆಗಾಗಿ ಕಲಿಕಾ ಕೇಂದ್ರಕ್ಕೆ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುವ ಬದಲು, ಜ್ಞಾನ ಸಂಪತ್ತನ್ನು ವಿದ್ಯೆ ಕಲಿಯುವವರ ಬಳಿ ಕೊಂಡೊಯ್ಯುವ ವಾಹಕವಾಗಿದೆ.

ಡಾ || ಕುಳಂದೈಸ್ವಾಮಿ

The Open University system has been initiated in order to augment opportunities for higher education and as an instrument of democratising education.

National Education Policy 1986

The Open University system makes use of Multi-media in distance education system. ..... it is a vehicle which transports knowledge to the place of learners rather than transport people to the place of learning.

Dr. Kulandai Swamy

हिन्दी एम .ए . प्रीवियस - प्रथम पत्र

KSOU
MGM-06

Hindi
Paper / Course - IV

ब्लाक सं

7

" हिन्दी व्याकरण "

Unit No. 9 to 12

अनुक्रमणिका : - **Page No.**

इकाई 9 वाच्य	1 - 16
इकाई 10 उपसर्ग और प्रत्यय	17 - 46
इकाई .11 अर्थ - कृदंत और तद्धित	47 - 74
इकाई 12 क्रियाविशेषण	75 - 92

पाठ्यक्रम अभिकल्प तथा संपादकीय समिति

प्रो.एम.जी.कृष्णन
उप कुलपति तथा अध्यक्ष
क. रा. मु. वि. विद्यालय,
मैसूर - 6

प्रो.एस.एन.विक्रमराज अरस
डीन (शैक्षणिक) - संयोजक
क. रा. मु. वि. विद्यालय
मैसूर - 6

डॉ. शशिधर. एल. जी संपादक
रीडर,
हिन्दी विभाग,
मैसूर विश्वविद्यालय,
मानस गंगोत्री
मैसूर - 6

बी. जी. चन्द्रलेखा संयोजिका
अध्यक्षा, हिन्दी विभाग (से.नि.)
क. रा. मु. वि. विद्यालय
मैसूर - 6

पाठ्यक्रम के लेखक **ब्लाक - 7**

डॉ. वी. डी. हेगडे,
रीडर, हिन्दी विभाग, (से.नि.) इकाई 9 - 12 तक
मैसूर विश्वविद्यालय,
मानस गंगोत्री
मैसूर - 6

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय, मैसूर शैक्षणिक अनुभाग द्वारा निर्मित।
सभी अधिकार सुरक्षित। कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय से लिखित अनुमति प्राप्त किए बिना, इस कार्य के किसी भी अंश को किसी भी रूप में अनुलिपित या किसी अन्य माध्यम द्वारा प्रतिकृति नहीं किया जाएगा।

कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम पर अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मानस गंगोत्री, मैसूर - 6 से प्राप्त की जा सकती है।
कर्नाटक राज्य मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से ***रजिस्ट्रार (प्रशासन)*** *द्वारा मुद्रित व प्रकाशित।*

ब्लाक परिचय

प्रिय विद्यार्थि - बन्धु ,

आपने ब्लाक 2 के अंतर्गत इकाई 5 में कारक और सर्वनाम, इकाई 6 में विशेषण, इकाई 7 में क्रिया तथा इकाई 8 में संयुक्त क्रिया के बारे में अध्ययन किया है।

प्रस्तुत ब्लाक के अंतर्गत इकाई 5 में वाच्य, इकाई 6 में उपसर्ग और प्रत्यय, इकाई 7 में अर्थ - कृदंत और तद्धित तथा इकाई 8 में क्रिया विशेषण के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

शुभकामनाओं के साथ,

डॉ.कांबले अशोक
अध्यक्ष ,
दी अध्ययन एवं अनुसंधान विभाग
क. रा. मु. वि. विद्यालय,
मैसूर - 6

इकाई - 9
वाच्य

इकाई की रूपरेखा

9.0 उद्देश्य
9.1 प्रस्तावना
9.2 मूल पाठ : वाच्य
9.2.1 वाच्य की परिभाषा
9.2.2 वाच्य के भेद
9.2.2.1 कर्तृवाच्य
9.2.2.2 कर्मवाच्य
9.2.2.3 भाववाच्य
9.2.2.4 कर्मकर्तृक वाक्य
9.2.2.5 प्रयोग
9.3 सारांश
9.4 बोध-प्रश्न
9.5 बोध-प्रश्नों के उत्तर-संकेत
9.6 परीक्षार्थ प्रश्नों के नमूने
9.7 उत्तर-संकेत
9.8 अध्ययन - सामग्री

9.0 उद्देश्य

क्रिया की रचना के पाँच आधार हैं - लिंग, पुरुष, वचन, वाच्य, काल और भाव। वास्तव में ये क्रिया की कोटियाँ हैं। इनके आधार पर क्रिया को विकारी शब्द-भेद माना जाता है । क्रिया का लिंग भी विशेषण की तरह बदलता है। जैसे:

i) उमड़ है पड़ती **दुःख** की घटा । ('प्रियप्रवास' - हरिऔध, तृतीय सर्ग)

ii) सुक्खू का एक-एक शब्द वीर रस में **डूबा हुआ था**। ('प्रेमाश्रम' - प्रेमचंद)

iii) वह गेहूँ के दाने किसी देवता के शाप की भाँति यावज्जीवन उसके सिर से न **उतरे**। ('सवा सेर गेहूँ' - प्रेमचंद)

उद्देश्य के वचन के अनुसार क्रिया (विधेय) का वचन भी बदलता है : यथा -

i) एक उपाय सूझ गया ।

ii) तट पर कई साधु धूनी जमाये पड़े थे ।

iii) यह कहकर भानुकुँवरि फिर पर्दे की आड़ में आ बैठी और रोने लगी ।

iv) स्त्रियाँ क्रोध के बाद किसी न किसी बहाने रोया करती हैं । (चारों वाक्य प्रेमचंद की कहानी 'ईश्वरीयन्याय' से उद्धृत)

पुरुष के अनुसार क्रियारूपों में विकारी आ जाता है । उदाहरण -

i) मैं जाता हूँ । जाऊँ । जाऊँगा ।

ii) हम जाते हैं । जाएँ । जाएँगे ।

iii) तू जाता है । जा । जाएगा ।

iv) तुम जाते हो । जाओ । जाओगे ।

v) यह । वह जाता है । जाए । जाएगा ।

vi) ये । वे जाते हैं । जाएँ जाएँगे ।

वाच्य भी क्रिया की उन व्याकरणिक कोटियों में से एक है जो क्रिया को रूपांतरित कर देता है । इस इकाई का उद्देश्य है - वाच्य को परिभाषित करना, वाच्य के भेद बताना और वाच्य तथा प्रयोग का अंतर स्पष्ट करना । हिन्दी भाषा की प्रकृति और संरचना से अवगत होने के लिए वाच्य की जानकारी आवश्यक है ।

9.1 प्रस्तावना

प्रस्तुत इकाई में वाच्य की परिभाषा, प्रकार और स्वरूप पर विचार किया जाएगा । विधान जिसके विषय में किया जाता है उसे आधार मानकर वाच्य के प्रकारों को निर्धारित किया जाएगा । वाक्य में क्रिया का मेल जिससे होता है उसे आधार मानकर प्रयोग के भेदों पर विचार किया जाएगा ।

9.2 मूल पाठ : वाच्य

कर्तृप्रधान क्रिया के साथ कर्ता का होना आवश्यक है, वैसे ही कर्मप्रधान क्रिया के संग कर्म अवश्य रहता है । जहाँ अकर्मक क्रिया का रूप कर्मप्रधान

क्रिया के समान मिलता है वहाँ उसे भावप्रधान समझना चाहिए । यह सिद्ध होता है कि जब प्रत्यय कर्ता में होता है तो कर्ता प्रधान होता है और जब कर्म में होता है तब कर्म। भाव में जब प्रत्यय आता है तो भाव ही प्रधान हो जाता है ; जैसे:

i) रात-भर किसीसे नहीं जागा जाता ।

ii) बिना बोले उससे नहीं रहा जाता ।

iii) बिना काम किसीसे बैठा जाता है ?

क्रिया के रूप से किये गए विधान को वाच्य कहते हैं । प्रस्तुत इकाई में वाच्य के विशिष्ट प्रयोगों का निरूपण है ।

9.2.1 वाच्य की परिभाषा

क्रिया का उपयोग विधान करने में होता है । क्रिया में वाच्य, काल, अर्थ, पुरुष, लिंग और वचन के कारण विकार होता है । जिस क्रिया में यह विकार पाया जाता है और जिसके द्वारा विधान किया जाता है, उसे समापिका क्रिया कहते हैं ; जैसे :

"सुक्खू ने कहा, हम मजदूर ठहरे, हम घमण्ड करें तो हमारी भूल है । जमींदार की जमीन में बसते हैं, उसका दिया खाते हैं, उससे बिगड़कर कहाँ जाएँगे ?"

(प्रेमचंद : प्रेमाश्रम 2)

उपर्युक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द समापिका क्रियाएँ हैं जिनमें वाच्य, काल-आदि व्याकरणिक कोटियों के कारण विकार या रूपांतर पाया जाता है । 'वाच्य' क्रिया की एक व्याकरणिक कोटि है जिसे विभिन्न विद्वानों ने इस प्रकार परिभाषित किया है :

i) पं. कामता प्रसाद गुरु के शब्दों में - "वाच्य क्रिया के उस रूपांतर को कहते हैं, जिससे जाना जाता है कि वाक्य में कर्ता के विषय में विधान किया गया है वा कर्म के विषय में अथवा केवल भाव के विषय में; जैसे -

स्त्री कपड़ा सीती है । (कर्ता)
कपड़ा सिया जाता है । (कर्म)
यहाँ बैठा नहीं जाता । (भाव)

ii) डा. हरदेव बाहरी के अनुसार - "वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे जाना जाय कि क्रिया का मुख्य विषय कर्ता है या कर्म या भाव । जैसे :

राम पत्र पढ़ता है । - कर्तृवाच्य

मुझसे पत्र पढ़ा जाता है । - कर्मवाच्य

यहाँ पढ़ा नहीं जाता । - भाववाच्य

पहले वाक्य क्रिया का संबंध कर्ता (राम) से है ; दूसरे में कर्म (पत्र) से और तीसरे में न राम से न पत्र से, बल्कि भाव से है कि पढ़ा नहीं जाता ।"

वास्तव में 'यहाँ पढ़ा नहीं जाता' कर्मवाच्य का ही उदाहरण है । कर्मपद के अनुल्लेख के कारण डा. हरदेव बाहरी ने इसे (ऐसी वाक्यसंरचना को) भाववाच्य के अन्तर्गत रखा है । जिस प्रकार "धूप में चला नहीं जाता" - जैसे वाक्य में भाव (या क्रिया) प्रधान है, उसी प्रकार "यहाँ पढ़ा नहीं जाता" - जैसे वाक्य में भी भाव (या क्रिया) पर बल दिया जाता है ।

iii) डा. हरिवंश तरुण के शब्दों में "कर्ता, कर्म अथवा भाव के अनुसार क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष का होना 'वाच्य' कहलाता है ।" यथा -

i) पंच में परमेश्वर वास करते हैं ।

(पंच-परमेश्वर : प्रेमचंद)

ii) बड़े घर की बेटियाँ ऐसी ही होती हैं ।

(बड़े घर की बेटी : प्रेमचंद)

iii) ईश्वरीय न्याय का भय एक भयंकर मूर्ति के सदृश उनके सामने खड़ा था ।

(प्रारब्ध : प्रेमचंद)

इन वाक्यों में 'परमेश्वर' 'बड़े घर की बेटियाँ' और 'ईश्वरीय न्याय का भय' क्रमशः कर्ता हैं । उनके अनुसार क्रियाओं के लिंग, वचन तथा पुरुष का होना पाया जाता है । ये तीनों वाक्य कर्तृवाच्य में हैं ।

iv) डा. वासुदेवनन्दन प्रसाद के अनुसार - "क्रिया के उस परिवर्तन को वाच्य कहते हैं, जिसके द्वारा इस बात का बोध होता है कि वाक्य के अन्तर्गत कर्ता, कर्म अथवा भाव इनमें से किसकी प्रधानता है ; इनमें किसके क्रिया के पुरुष, वचन आदि आए हैं ।"

v) बदरीनाथ ने "वाच्य" को "कथन-प्रकार के विचार से वाक्य-रचना" कहा है।

9.2.2 वाच्य के भेद

कथन-प्रकार के विचार से वाक्य-रचना के तीन भेद हैं - कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य ।

धातुओं के आधार पर हम इन तीन वाच्यों को इस प्रकार बाँट सकते हैं :

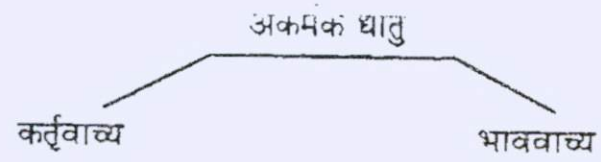

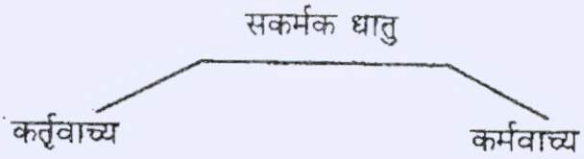

रूप के आधार पर हम इन वाच्यों को दो वर्गों में रख सकते हैं

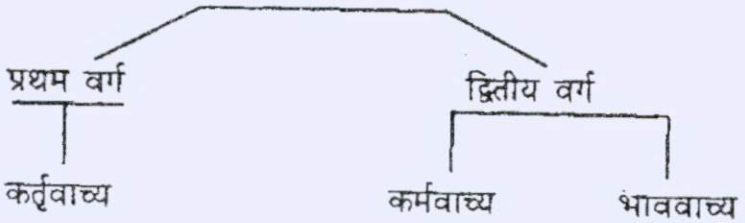

रूप की दृष्टि से कर्मवाच्य और भाववाच्य में कोई विशेष अंतर नहीं है - अर्थ का अंतर है और कर्म के होने या न होने का अंतर है । यथा :

खाया जाता है; देखा जाता है; लिखा जाता है । (कर्मवाच्य) सोया जाता है; बैठा जाता है । (भाव-वाच्य)

रूप-रचना की दृष्टि से कर्मवाच्य और भाववाच्य में समानता है ।

9.2.2.1 कर्तृवाच्य

पं. कामता प्रसाद गुरु के अनुसार - "कर्तृवाच्य क्रिया के उस रूपांतर को कहते हैं जिससे जाना जाता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्ता है ; जैसे - लड़का दौड़ता है । लड़का पुस्तक पढ़ता है ।"

डा. वासुदेव नन्दन प्रसाद के शब्दों में - "क्रिया के उस रूपांतर को कर्तृवाच्य कहते हैं, जिससे वाक्य में कर्ता की प्रधानता का बोध हो ।

प्रो. नागप्पा के मतानुसार - "वाच्य क्रिया का वह रूप है जिससे यह जाना जाता है कि विधान

i) कर्ता के विषय में किया गया है, (कर्तृवाच्य)

या ii) कर्म के विषय में किया गया है, (कर्मवाच्य)

या iii) भाव के विषय में किया गया है । (भाववाच्य)

यदि विधान कर्ता के विषय में किया गया हो तो कर्तृवाच्य होता है। " जैसे:

i) यह कहते - कहते लालबिहारी का गला भर आया । (बड़े घर की बेटी प्रेमचंद)

ii) बुद्धिमान लोग मर्खों की बात पर ध्यान नहीं देते । (वही) : प्रेमचंद)

बदरीनाथ कपूर के शब्दों में - "जब अकर्मक एवं सकर्मक धातु के क्रियापदों से कर्ता का व्यापार सूचित हो तब वाक्य-रचना कर्तृवाच्य होती है ।" जैसे :

अकर्मक धातु 'आ' से बने क्रियापद :

1 प्रवृत्तिमूलक काल	-	राम आता है ।
2 निष्पन्नतामूलक काल	-	राम आया है ।
3 औचित्यमूलक काल	-	राम को आना है ।
4 तथ्यमूलक काल	-	राम आएगा ।
5 संभावनामूलक काल	-	राम आता होगा ।
6 संकेतमूलक काल	-	राम आए ।
7 आदेशमूलक काल	-	राम (तू) आ ।
8 निदेशमूलक काल	-	राम (तू) आना ।
9 आवश्यकतामूलक काल	-	राम को आना चाहिए ।

सकर्मक धातु 'खरीद' से बने क्रियापद

M.A. Hindi Course 4 - Block 7 form No. 2 Back

1 प्रवृत्तिमूलक काल	-	राम पुस्तक खरीदता है ।
2 निष्पन्नतामूलक काल	-	राम ने पुस्तक खरीदी है ।
3 औचित्यमूलक काल	-	राम को पुस्तक खरीदना है ।
4 तथ्यमूलक काल	-	राम पुस्तक खरीदेगा ।
5 संभावनामूलक काल	-	राम पुस्तक खरीदता होगा ।
6 संकेतमूलक काल	-	राम पुस्तक खरीदे ।
7 आदेशमूलक काल	-	राम (तू) पुस्तक खरीद ।
8 निदेशमूलक काल	-	राम (तू) पुस्तक खरीदना।
9 अवश्यरकामूलक काल	-	राम को पुस्तक चाहिए।

सभी क्रियापद कर्ता राम के व्यापार के सूचक हैं आदेश तथा निदेश व्यक्ति-सापेक्ष होता है, क्रिया -सापेक्ष नहीं।

9.2.2.2 कर्मवाच्य

पं कामता प्रसाद गुरु के अनुसार " क्रिया के उस रूप को कर्मवाच्य कहते हैं, जिससे जाता जाता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्म है। जैसे - कपड़ा किया जाता है। चिट्ठी भेजी गई। "

कर्मवाच्य केवल सकर्मक क्रियाओं में होता है। कर्मावाच्य में कर्म प्रधान है। कर्म गौण है। वाक्य में कर्म ही व्याकरणिक कर्ता बन जाता है। कर्मवाच्य में कर्ता में ' से ' परसर्ग लगता है।

जैसे

राम से खाया जाता है।

राम से पढ़ा जाता है।

गोपाल से लिखा जाता है।

इन वाक्यों में मुख्य क्रियाएँ (खाया, पढ़ा, लिखा) व्यापारद्योतक हैं। ' जाता है ' सहायक क्रिया है। वह कालद्योतक है

राम फल खाता है । (कर्तृवाच्य)

राम से फल खाया जाता है । (कर्मवाच्य)

'खाता है' कर्तृवाच्य की क्रिया पुल्लिंग एकवचन में है । 'खाया' 'खा' धातु का भूतकालिक कृदन्त है । यही 'खा' धातु का भूतकालिक कृदन्त है । यही ' खा'

धातु का भूतकालिक रूप है। 'खा' में 'आ' जोड़ने से भूतकालिक क्रिया-रूप (पु. ए.) बनता है । इसी प्रकार 'लिख' में 'आ' जोड़ने से 'लिखा' बनता है । प्रयोग के अनुसार हम इसे पहचान सकते हैं। यथा :

i) उसने खत लिखा ।

इस वाक्य में 'लिखा' लिख-धातु का भूतकालिक रूप है ।

ii) उसका लिखा हुआ खत ।

इस वाक्यांश में 'लिखा' लिख-धातु का भूतकालिक कृदन्त है ।

कर्मवाच्य में उद्देश्य कभी अप्रत्यय कर्मकारक में (जो रूप में अप्रत्यय कर्ताकारक के समान होता है) और कभी सप्रत्यय कर्मकारक में आता है, जैसे:

i) डोली एक अमराई में उतारी गई । (अप्रत्यय)

ii) डाकू को मारा जाता है । (सप्रत्यय अथवा सपरसर्ग)

पं. कामता प्रसाद गुरु के अनुसार - "कर्मवाच्य के उद्देश्य को कर्मकारक में रखने का प्रयोग आधुनिक और एकदेशीय है । 'रामचरितमानस' तथा 'प्रेमसागर' में यह प्रयोग नहीं है । अधिकांश शिष्ट लेखक भी इससे मुक्त हैं। इस प्रयोग के विषय में द्विवेदी जी 'सरस्वती' में लिखते हैं कि 'तब खान बहादुर और उनके साथी (१) उसको पेश किया गया, (2) खत को लाया गया, (3) मुल्क को बरबाद किया गया, इत्यादि अशुद्ध प्रयोग कलम से निकालते जरुर हिचकें ।"

हिन्दी में कर्मवाच्य का प्रयोग बहुधा निम्नलिखित अर्थों में होता है :

1 जब क्रिया का कर्ता अज्ञात हो - जैसे - चोर पकड़ा गया है ।

2 जब क्रिया के कर्ता को व्यक्त करने की आवश्यकता न हो -

जैसे : आज हुक्म सुनाया जायगा ।

3 कानूनी भाषा और सरकारी कागज़ पत्रों में प्रभुता जताने के लिए - जैसे :

अ) इत्तिला दी जाती है ।

आ) तुमको यह लिखा जाता है ।

इ) सख्त कार्रवाई की जायगी ।

4 अशक्तता के अर्थ में - जैसे :

क) रोगी से अन्न नहीं खाया जाता ।

ख) हमसे तुम्हारी बात न सुनी जाएगी ।

5 किंचित् अभिमान में - जैसे :

च) यह फिर देखा जायगा ।

छ) नौकर बुलाये गए हैं ।

ज) आपको यह बात बताई गई हैं ।

झ) उसे पेश किया गया ।

6 बयानिया भाषा में कर्मवाच्य प्रयुक्त होता है :

ट) ऐसा कहा जाता है कि डाकुओं पर बेहद सख्ती की गई ।

('कर्तृवाच्य' में कहते हैं कि .....)

ठ) ऐसा सुना गया है कि ..... (कर्मवाच्य)

(ऐसा सुनने में आया है कि ..... (कर्तृवाच्य)

कर्मवाच्य के बदले में बहुधा निम्नलिखित वाक्य प्रयुक्त होते हैं :

1. कभी कभी सामान्य वर्तमानकाल की अन्यपुरुष बहुवचन क्रिया का प्रयोग करके कर्ता का अध्याहार करते हैं :-

अ) ऐसा कहते हैं । (ऐसा कहा जाता है ।)

आ) ऐसा सुनते हैं । (ऐसा सुना जाता है ।)

इ) सूत को कातते हैं और उससे कपड़ा बनाते है ।

(सूत काता जाता है और उससे कपड़ा बनाया जाता है ।)

ई) तरावट के लिए तालु पर तेल मलते हैं ।

(तरावट के लिए तालु परतेल मला जाता है ।)

2 कभी कभी कर्मवाच्य की समानार्थिनी

अकर्मक क्रिया का प्रयोग होता है ; जैसे :

अ) घर बनता है (बनाया जाता है ।)

आ) वह लड़ाई में मरा (मारा गया)

इ) सड़क सिंच रही है (सींची जा रही है)

3 कुछ सकर्मक क्रियार्थक संज्ञाओं के अधिकरण कारक के साथ ' आना ' क्रिया के विवक्षित काल का प्रयोग होता है । यथा :

अ) सुनने में आया है (सुना गया है ।)

आ) देखने में आता है (देखा जाता है ।)

4 किसी किसी सकर्मक धातु के साथ ' पड़ना ' क्रिया आती है । यथा :

क) ये सब बातें देख पड़ेंगी आगे ।

ख) जान पड़ता है ।

ग) सुन पड़ता है ।

5 कभी कभी पूर्ति (संज्ञा या विशेषण) के साथ 'होना' क्रिया के विवक्षित कालों का प्रयोग होता है । यथा :

च) नानक उस गाँव के पटवारी हुए (बनाए गए) ।

छ) यह रीति प्रचलित हुई (की गई) ।

6 भूतकालिक कृदन्त (विशेषण) के साथ संबंध कारक और 'होना' क्रिया के कालों का प्रयोग किया जाता है । यथा :

य) यह बात मेरी जानी हुई है (मुझसे जानी गई है) ।

र) यह काम लड़के का किया होगा (लड़के से किया गया होगा) ।

ल) यह कहानी मेरी सुनी हुई है (मुझसे सुनी गई है) ।

व) 'गोदान' (उपन्यास) प्रेमचंद का लिखा हुआ है (प्रमचंद से लिखा गया है ।)

7 अपूर्ण सकर्मक क्रियाओं के कर्मवाच्य में मुख्य कर्म उद्देश्य होता है, परंतु वह कभी-कभी कर्मकारक में आता है । जैसे :

अ) सिपाही सरदार बनाया गया ।

आ) कांस्टेबलों को कालेज के अहाते में न खड़ा किया जाता।

(शिवशंभु का चिट्ठा - बाल मुकुन्द गुप्त)

कर्मवाच्य में क्रियापद कर्म का व्यापार सूचित करता है । कर्म के परसर्ग से युक्त होने पर कर्मवाच्य के रूप निम्नलिखित कालों में इस प्रकार बनते हैं :

क्र. सं	काल	उदाहरण
1	प्रवृत्तिमूलक काल .	राम के द्वारा / से घोड़े को खरीदा जाता है । सीता के द्वारा / से घोड़े को खरीदा जाता है । राम के द्वारा / से घोड़ों को खरीदा जाता है । सीता के द्वारा / से घोड़ों को खरीदा जाता है ।
2	निष्पन्नतामूलक काल	राम के द्वारा / से घोड़े को खरीदा गया है ।
3	औचित्यमूलक काल	राम के द्वारा / से घोड़े को खरीदा जाना है ।
4	तथ्यमूलक कल	राम के द्वारा / से घोड़े को खरीदा जाएगा ।

5	संभावनामूलक काल	राम के द्वारा / से घोड़े को खरीदा जाता होगा ।
6	संकेतमूलक काल	राम के द्वारा / से घोड़े को खरीदा जाए ।

कर्म के परसर्ग-रहित होने पर कर्मवाच्य के रूप निम्नलिखित कालों में इस प्रकार बनते हैं :

क्र. सं	काल	उदाहरण
1	प्रवृत्तिमूलक काल	श्याम के द्वारा / से घोड़ा लाया जाता है ।
		श्याम के द्वारा / से पुस्तक लाई जाती है ।
		श्याम के द्वारा / से घोड़े लाये जाते हैं ।
		श्याम के द्वारा / से पुस्तकें लाई जाती हैं ।
2	निष्पन्नतामूलक काल	राम के द्वारा / से घोड़ा खरीदा गया है ।
		राम के द्वारा / से पुस्तक खरीदी गई है ।
		राम के द्वारा / से घोड़े खरीदे गए हैं ।
		राम के द्वारा / से पुस्तकें खरीदी गई हैं ।
3	औचित्यमूलक काल	राम के द्वारा / से घोड़ा खरीदा जाना है ।
		राम के द्वारा /से पुस्तक खरीदी जानी है ।
4	तथ्यमूलक काल	राम के द्वारा / से घोड़ा खरीदा जाएगा ।
		राम के द्वारा / से पुस्तक खरीदी जाएगी ।
5	संभावनामूलक काल	राम के द्वारा / से घोड़ा खरीदा जाता होगा ।
		राम के द्वारा / से घोड़े खरीदे जाते होंगे ।
		राम के द्वारा / से पुस्तक खरीदी जाती होगी ।
		राम के द्वारा / से पुस्तकें खरीदी जाती होंगी ।
6	संकेतमूलक काल	राम के द्वारा / से घोड़ा खरीदा जाए ।
		राम के द्वारा / से घोड़े खरीदे जाएँ ।
		राम के द्वारा / से पुस्तक खरीदी जाए ।
		राम के द्वारा / से पुस्तकें खरीदी जाएँ ।
7	आवश्यकतामूलक काल	राम के द्वारा / से घोड़ा खरीदा जाना चाहिए ।
		राम के द्वारा / से घोड़े खरीदे जाने चाहिए ।
		राम के द्वारा / से पुस्तक खरीदी जानी चाहिए ।
		राम के द्वारा / से पुस्तकें खरीदी जानी चाहिए ।

स्मरण रखना चाहिए कि आदेश तथा निदेशमूलक कालों में कर्मवाच्य का प्रयोग नहीं होता ।

कर्तृवाच्य की मुख्य क्रिया 'सुन' या 'देख' धातु से बनी हो तो कर्मवाच्य में 'जा' के स्थान पर 'दे' या 'पड़' धातु के सहकारी क्रियापदों का प्रयोग विकल्प से होता है । कर्मवाच्य में 'जा' के स्थान पर 'दे' या 'पड़' धातु का प्रयोग करने पर कर्ता में 'को' परस्वर्ग जोड़ा जाता है और मुख्य क्रियापद 'आई' प्रत्ययुक्त भाववाचक स्त्रीलिंग संज्ञा रूप में प्रयुक्त होता है; जैसे :

राम को शब्द सुनाई देता है ।
मोहन को शब्द सुनाई पड़ता है ।
श्याम को चित्र दिखाई देता है ।
राधा को चित्र दिखाई पड़ता है ।

जब 'बन' धातु सहकारी क्रियापद के रूप में प्रयुक्त होता है तो मुख्य क्रिया के अकर्मक होने पर भाववाच्य और सकर्मक होने पर कर्मवाच्य होता है । यथा:

उससे चलते नहीं बनता । (भाववाच्य)
राजीव से पुस्तक खरीदते नहीं बनती । (कर्मवाच्य)

कर्मवाच्य में कर्ता का उल्लेख अनावश्यक हो तो छोड़ भी दिया जाता है और 'को' परसर्ग का विकल्प से लोप भी हो जाता है । जैसे :

घोड़े को खरीदा जाता है ।
घोड़ा खरीदा जाता है ।
चोर को पकड़ा जाता है ।
चोर पकड़ा जाता है ।
मुझको मारा जाता है ।
मैं मारा जाता हूँ ।

9.2.2.3 भाववाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्ता या कर्म कोई नहीं है, उस रूप को भाववाच्य कहते हैं ; जैसे :

"यहाँ कैसे बैठा जायगा ?"
"धूप में चला नहीं जाता ।" (पं. कामता प्रसाद गुरु)

भाववाच्य का प्रयोग बहुधा अशक्तता के अर्थ में होता है । ऊपरी वाक्य अशक्तता प्रकट करते हैं । यह द्रष्टव्य है कि भाववाच्य की क्रिया अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन में रहती है ।

कर्तृवाच्य को भाववाच्य में ढालते समय कर्ता में ' के द्वारा ' या ' से ' परसर्ग जोड़ा जाता है; मुख्य क्रिया का आप्रत्ययान्त रूप प्रयुक्त होता है और उसके बाद ' जा ' धातु का रूप रखा जाता है । जैसे : छात्र से बैठा जाता है ।

'बैठा' ('बैठ' धातु का आप्रत्ययान्त रूप) भूतकालिक कृदन्त है ।

निम्नलिखित कालों में भाववाच्य का प्रयोग होता है :

i) प्रवृत्तिमूलक काल

मोहन के द्वारा / से बैठा जाता है ।

राधा के द्वारा / से बैठा जाता है ।

ii) निष्पन्नतामूलक काल

मोहन के द्वारा / से बैठा गया है ।

राधा के द्वारा / से बैठा गया है ।

iii) तथ्यमूलक काल

मोहन के द्वारा / से बैठा जाएगा ।

राधा के द्वारा / से बैठा जाएगा ।

iv) संकेतमूलक काल

मोहन के द्वारा / से बैठा जाए ।

राधा के द्वारा / से बैठा जाए ।

v) संभावनामूलक काल

मोहन के द्वारा / से बैठा जाता होगा ।

राधा के द्वारा / से बैठा जाता होगा ।

यह द्रष्टव्य है कि भाववाच्य में औचित्यमूलक काल के रूप नहीं चलते । औचित्य, आदेश, निदेश तथा आवश्यकतामूलक कालों के भाववाच्य रूप हिन्दी में प्रयुक्त नहीं होते ।

संयुक्त क्रियाओं के भाववाच्य पर विचार करने पर मालूम होता है कि भाववाच्य में केवल नामबोधक और केवल पुनरुक्त अकर्मक क्रियाएँ आती हैं ; जैसे :

"अन्याय देखकर किसीसे चुप नहीं रहा जाता ।
लड़के से कैसे चला फिरा जायगा ।"

9.2.2.4 कर्मकर्तृक वाक्य

कर्मवाच्य के द्वारा प्रयत्नपूर्वक किये व्यापार का बोध होता है । कर्मकर्तृक क्रिया द्वारा प्रयत्न बिना हुए व्यापार का भी बोध होता है । कर्मकर्तृक वाक्य-रचना में कर्तृवाच्य वाक्य-रचना के कर्ता का लोप हो जाता है । कर्मवाच्य वाक्यरचना के सकर्मक धातु से बने क्रियापद को तत्संबंधी अकर्मक धातु से बने क्रियापद का रूप देने से कर्मकर्तृक वाक्य बनते हैं । यथा -

"अतिवर्षा के कारण पुल टूट गया ।
काँच का गिलास बच्चे के हाथ से गिरकर टूट गया ।"

निम्नलिखित वाक्य-रचनाएँ द्रष्टव्य हैं :

अ) i) रमेश घर बनाता है । (कर्तृवाच्य)
ii) रमेश के द्वारा / से घर बनाया जाता है । (कर्मवाच्य)
iii) घर बनता है । (कर्मकर्तृक)

आ) i) गोपाल मिठाई बाटता है । (कर्तृवाच्य)
ii) गोपाल के द्वारा / से मिठाई बाँटी जाती है । (कर्मवाच्य)
iii) मिठाई बँटती है । (कर्मकर्तृक)

इ) i) विनोद दरवाजा खोलता है । (कर्तृवाच्य)
ii) विनोद के द्वारा / से दरवाजा खोला जाता है । (कर्मवाच्य)
iii) दरवाजा खुलता है । (कर्मकर्तृक)

ई) i) दर्जी कमीज सीता है । (कर्तृवाच्य)
ii) दर्जी के द्वारा / से कमीज सी जाती है । (कर्मवाच्य)
iii) कमीज सिलती है ।

9.2.2.5 प्रयोग

क्रिया के अन्वय (मेल) को प्रयोग कहते हैं । लिंग, वचन एवं पुरुष की दृष्टि से क्रिया का मेल कर्ता से हो तो कर्तरि प्रयोग होता है ; कर्म से हो तो कर्मणि

प्रयोग होता है और क्रिया कर्ता या कर्म के अनुसार न रहकर एकवचन, पुल्लिंग तथा अन्य पुरुष में हो तो भावे प्रयोग होता है । जैसे :

मैं फल खाता हूँ । (कर्तरि प्रयोग)
राम से रोटी खाई जाती है । (कर्मणि प्रयोग)
उससे दौड़ा नहीं जाता । (भावे प्रयोग)

पं. कामता प्रसाद गुरु के अनुसार "हिन्दी की रचना "लड़के ने पुस्तक पढ़ी' संस्कृत की रचना" बालकेन पुस्तिका पठिता" के बिलकुल समान है । तथापि हिन्दी की यह रचना कुछ विशेष कालों ही में होती है और इसमें कर्म की ही प्रधानता नहीं है किन्तु कर्ता की भी है । इसलिए 'यह रचना रूप के अनुसार कर्मवाच्य होने पर भी अर्थ के अनुसार कर्तृवाच्य है । इसी. प्रकार "रानी ने सहेलियों को बुलाया" - इस वाक्य में 'बुलाया' क्रिया रूप के अनुसार तो भाववाच्य है; परंतु अर्थ के अनुसार कर्तृवाच्य ही है ।" (हिन्दी व्याकरण)

9.3 सारांश

इस इकाई में आपने वाच्य के बारे में पढ़ा है । इसके प्रमुख अंश इस प्रकार हैं :

- वाक्य का कथन-प्रकार वाच्य कहलाता है ।
- सकर्मक धातु के क्रियापदों से कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य के वाक्य बनते हैं।
- अकर्मक धातु के क्रियापदों से कर्तृवाच्य तथा भाववाच्य के वाक्य बनते हैं ।
- भाववाच्य में क्रिया सदा अन्य पुरुष-पुल्लिंग-एकवचन में रहती है ।
- उस कर्मवाच्य वाक्य-रचना को कर्मकर्तृक कहते हैं जिसमें कर्म कर्ता के समान प्रयुक्त होता है ।
- वाक्य में क्रिया का अन्वय (मेल) प्रयोग कहलाता है ।

9.4 बोध-प्रश्न

i) वाच्य किसे कहते हैं ?

ii) प्रयोग किसे कहते हैं ? उसके कितने भेद हैं ?

9.5 बोध-प्रश्नों के उत्तर-संकेत

i) देखिए उपपाठ 9.2.1

ii) देखिए उपपाठ 9.2.2.5

9.6 परीक्षार्थ प्रश्नों के नमूने

i) वाच्य की परिभाषा देते हुए, उसके भेदों को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए ।

ii) टिप्पणी लिखिए :

अ) कर्तृवाच्य आ) कर्मवाच्य इ) भाववाच्य ई) कर्मकर्तृक वाक्य

9.7 उत्तर-संकेत

i) देखिए उपपाठ 9.2.1, 9.2.2, 9.2.2.1, 9.2.2.2, 9.2.2.3

ii) देखिए उपपाठ अ) 9.2.2.1 आ) 9.2.2.2 इ) 9.2.2.3 ई) 9.2.2.4

9.8 अध्ययन-सामग्री

1) हिन्दी व्याकरण - कामता प्रसाद गुरु

2) शिक्षार्थी हिन्दी व्याकरण - प्रो. ना. नागप्पा

3) परिष्कृत हिन्दी व्याकरण - बदरीनाथ कपूर

4) मानक हिन्दी व्याकरण और रचना - डा. हरिवंश तरुण

इकाई - 10
उपसर्ग और प्रत्यय

इकाई की रूपरेखा

10.0 उद्देश्य

10.1 प्रस्तावना

10.2 उपसर्ग की परिभाषा

- 10.2.1 संस्कृत उपसर्ग
- 10.2.2 हिंदी उपसर्ग
- 10.2.3 उर्दू उपसर्ग
- 10.2.4 अंग्रेजी उपसर्ग

10.3 प्रत्यय की परिभाषा

- 10.3.1 संस्कृत प्रत्यय
  - 10.3.1.1 संस्कृत कृदंत
  - 10.3.1.2 संस्कृत तद्धित
- 10.3.2 हिंदी प्रत्यय
  - 10.3.2.1 हिंदी कृदंत
  - 10.3.2.2 हिंदी तद्धित
- 10.3.3 उर्दू प्रत्यय

10.4 उपसंहार

10.5 बोध प्रश्न

10.6 सहायक ग्रंथ

10.0 उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई में आप

- उपसर्ग की परिभाषा जान पायेंगे ।
- संस्कृत, हिंदी तथा उर्दू के विभिन्न उपसर्गों तथा उनसे बने नये शब्दों को समझ पायेंगे ।
- प्रत्यय की परिभाषा जान पायेंगे ।
- प्रत्ययों से बने शब्दों के विभिन्न रूप समझ पायेंगे ।

10.1 प्रस्तावना :

रचना या बनावट के आधार पर शब्दों के तीन भेद किये जाते हैं - रूढ़, यौगिक तथा योगरूढ । रूढ़ वे शब्द हैं जिनके सार्थक खंड न हो सकें । यौगिक का अर्थ है जूडा हुआ । जब किसी रूढ़ शब्द के साथ कोई और अर्थवान शब्द जुडता है तो उसे यौगिक कहते हैं । जो शब्द बनावट में यौगिक होते हुए भी रूढ अर्थ में प्रयुक्त होते हैं वे योग रूढ कहलाते हैं। इस इकाई में हम यौगिक शब्दों पर विचार करेंगे जिनकी रचना उपसर्ग और प्रत्यय द्वारा होती है ।

10.2 उपसर्ग की परिभाषा

एक ही भाषा के किसी शब्द से जो दूसरे शब्द बनते है, वे बहुधा तीन प्रकार से बनाए जाते हैं -

1) किसी किसी शब्द के पूर्व एक दो अक्षर लगाने से नए शब्द बनते हैं ।
2) किसी शब्द के पश्चात एक दो अक्षर लगाकर नए शब्द बनाए जाते हैं ।
3) किसी किसी शब्द के साथ दूसरा शब्द मिलाने से नए संयुक्त शब्द तैयार होते हैं ।

शब्द के पूर्व जो अक्षर समूह लगाया जाता है उसे उपसर्ग कहते हैं -

जैसे-

अन + देखा = अनदेखा

अन + सुना = अनसुना

अन + बन = अनबन

उपर्युक्त शब्दों में 'अन' उपसर्ग है ।

(संस्कृत में शब्दों के पूर्व आनेवाले कुछ नियत अक्षरों को उपसर्ग कहते हैं और बाकी को अव्यय मानते हैं । यह अन्तर उस भाषा की दृष्टि से महत्व का भी हो, पर हिंदी में ऐसा अंतर मानने का कोई कारण नहीं । इसलिए हिंदी में 'उपसर्ग' शब्द की योजना अधिक व्यापक अर्थ में होती है ।)

हमें इसपर विशेष ध्यान देना होगा कि -

- उपसर्ग तथा प्रत्यय ऐसे सहायक शब्द हैं जो शब्दों के साथ जुड़कर नए शब्द बनाते हैं ।
- उपसर्ग तथा प्रत्यय सहायक शब्दों में नहीं जुडते ।

■ ऐसे सहायक शब्द जो शब्दों के प्रारंभ में जुडते हैं, उन्हें उपसर्ग कहते हैं ।

(सूचना : उपसर्ग सहायक शब्द ही हैं । 'अधजला' में 'अध' उपसर्ग नहीं है । यह 'आधा' विशेषण का संक्षिप्त रूप है ।)

10.2.1 संस्कृत उपसर्ग :

पहले संस्कृत उपसर्ग मुख्य अर्थ और उदाहरण सहित दिए जाते हैं । संस्कृत में इन उपसर्गों को धातुओं के साथ जोडने से उनके अर्थ में हेरफेर होता है, परन्तु उस अर्थ का स्पष्टीकरण हिन्दी व्याकरण का विषय नहीं । हिंदी में उपसर्गयुक्त जो संस्कृत तत्सम शब्द आते हैं, उन्हीं शब्दों के संबंध में यहाँ उपसर्ग का विचार करना है । वे उपसर्ग कभी-कभी निरे हिन्दी शब्दों में लगे हुए पाए जाते हैं । संस्कृत उपसर्गों के उदाहरण निम्नलिखित हैं -

अ - अकाल, अशिक्षित

अति अधिक - अतिशय, अतिक्रमण, अतिकाल, अतिरिक्त (सूचना - हिंदी में 'अति' इसी अर्थ में स्वतंत्र शब्द के समान प्रयक्त होता है । जैसे - अति बुरी होती है ।)

अधि (ऊपर, स्थान में श्रेष्ठ) - अधिकार, अधिकरण; अधिपाठक, अधिष्ठाता;

उन् - अनादर (अन् + आदर); अनभीष्ट (अन् + अभीष्ट)
('अन्' वस्तुतः 'अ' उपसर्ग का ही एक रूप है ।

अनु (पीछे) - अनुकरण; अनुग्रह; अनुचर; अनुज, अनुपात; अनुरूप; अनुशासन; अनुस्वार;

अप (बुरा हीन - अपयश; अपकीर्ति; अप्रभंश, अपमान, अपराह्न अपशब्द ; अपव्यय, अपहरण;

अभि = ओर, पास, सामने ।
उदा = अभिप्राय, अभिमुख; अभिमान; अभिलाष, अभिसार अभ्यागत; अभ्यास, अभ्युदय ।

अव = नीचे, हीन, अभाव ।
उदा = अवगत, अवगाह; अवगुण, अवतार; अवनत, अवलोकन; अवसान; अवस्था ।
(सूचना : प्राचीन कविता में 'अव' का रूप बहुधा 'औ' पाया जाता है । जैसे = औगुन, औसर)

आ = तक, समेत, उलटा ।

उदा = आकर्षण; आकार; आकाश; आक्रमण, आगमन; आचरण; आबालवृद्ध, आरंभ ।

उत् = ऊपर ।

उदा = उत्कर्ष; उत्कंठा; उत्तम; उत्पल ।

उद् = उद्गार; उद्यम; उद्देश्य।

उप = निकट, सदृश, गौण।

उदा = उपकार, उपदेश; उपनाम, उपनेत्र, उपभेद, उपयोग, उपवचन, उपवेद ।

दुर् वुरा उदा = दुराचार; दुर्गुण, दुर्जन; दुर्दशा; दुर्दिन; दुर्लभ, दुर्बल ।

दुश, दुष्, दुस = कठिन ।

उदा = दुश्चिंता; दुष्कर्म; दुष्प्राप्य; दुःसह, दुस्साहस ।

नि = भीतर, नीचे, बाहर ।

उदा = निकृष्ट; निदर्शन; निदान; निपात, निबंध, नियुक्त ; निरूपण ।

निर् = बाहर, निषेध ।

उदा = निराकरण, निर्मम, निश्शंक; निरपराध; निर्भय, निर्वाह ।

निश् / निष् / निष -

निश्चल; निष्कंटक; निस्तेज ।

(सूचना : निश्, निष् तथा निस् वस्तुतः 'निर्' के ही उपसर्ग है । हिंदी में निर् / निश् यह उपसर्ग बहुधा 'नि' हो जाता है, जैसे - निर्धन, निर्बल, निडर, निसंक)

परा = पीछे, उलटा ।

उदा - पराक्रम; पराजय; पराभव, परामर्श, परावर्तन ।

परि = आसपास, चारोओर ।

उदा - परिक्रमा, परिजन, परिणाम, परिधि, परिपूर्ण; परिमाण; परिवर्तन, परिणय; पर्याप्त ।

प्र = अधिक, आगे, ऊपर ।

उदा - प्रकाश; प्रख्यात; प्रचार; प्रभु, प्रयोग, प्रसार; प्रस्थान; प्रलय ।

प्रति = विरुद्ध, सामने, एक एक ।

उदा - प्रतिकूल; प्रतिक्षण; प्रतिध्वनि; प्रतिकार; प्रतिनिधि; प्रतिवादी; प्रत्यक्ष, प्रत्यपकार; प्रत्येक ।

वि = भिन्न, विशेष, अभाव ।

उदा - विकास; विज्ञान, विदेश, विधता, विवाद, विशेष, विस्मरण ।

सम = अच्छा, साथ, पूर्ण ।

उदा = संकल्प; संगम; संग्रह; संतोष; संन्यास, संयोग; संस्करण; संरक्षण; संहार ।

सु = अच्छा, सहज, अधिक ।

उदा - सुकर्म; सुकृत; सुगम; सुलभ, सुशिक्षित; सुदूर ; स्वागत ।
(हिंदी - सुडौल, सुजान, सुघर)

संस्कृत शब्दों में कोई-कोई विशेषण और अव्यय भी उपसर्गों के समान व्यवहृत होते हैं । उनका यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है । क्योंकि ये बहुधा स्वतंत्ररूप से उपयोग में नहीं आते ।

अ - अभाव, निषेध ।

उदा - अज्ञान, अधर्म, अनीति, अलौकिक, अव्यय ।

स्वरादि शब्दों के पहले 'अ' के स्थान में 'अन्' हो जाता है और 'अन्' के 'न्' के आगे का स्वर मिल जाता है।

उदा - अनंतर, अनिष्ट, अनाचार, अनादि, अनायास, अनेक ।

हिंन्दी - अछत, अजान, अटल, अथाह, अलग ।

अधस् - अधोगति, अधोमुख, अधोभाग, अधःपतन, अधस्तल ।

अंतर - भीतर ।

उदा - अंतःकरण, अंतःस्थ; अंतर्दशा; अंतर्भाव; अंतर्वेदी ।

अमा - पास

उदा - अमात्य, अमावास्या ।

अलम् - सुन्दर ।

उदा - अलंकार; अलंकृत; अलंकृति ।
(यह अव्यय बहुधा 'कृ' धातु के पूर्व आता है ।)

आविर् - प्रकट, बाहर ।

उदा - आविर्भाव; आविष्कार ।

इति - ऐसी, यह ।

उदा - इतिवृत्त, इतिहास; इतिकर्तव्यता ।

(सूचना - 'इति' शब्द हिंदी में बहुधा इसी अर्थ में स्वतंत्र शब्द के समान भी आता है ।)

कु - कुरा ।

उदा - कुकर्म; कुरूप; कुशकुन ।

(हिंदी - कुचाल, कुडौल, कुठौर, कुढंगा, कुपूत)

चिर - बहुत ।

उदा - चिरकाल; चिरंजीवी; चिरायु ।

तिरस् - तुच्छ ।

उदा - तिरस्कार; तिरोहित ।

न - अभाव ।

उदा - नक्षत्र, नग, नपुसंक; नास्तिक ।

नाना - बहुत ।

उदा - नानारूप, नानाजाति ।

(सूचना - हिंदी में 'नाना' बहुधा स्वतंत्र शब्द के समान प्रयुक्त होता है - जैसे - 'लागे विटप मनोहर नाना ।')

पुरस् - सामने, आगे ।

उदा - पुरस्कार; पुरश्चरण; पुरोहित ।

पुरा - पहले ।

उदा - पुरातत्व; पुरातन; पुरावृत्त ।

पुनर - फिर ।

उदा - पुनर्जन्म; पुनर्विवाह; पुनरुक्त ।

प्राक् - पहले का ।

उदा - प्राक्कथन; प्राक्कर्म; प्राक्तन ।

प्रातर् - सबेरे ।

उदा - प्रातःकाल; प्रातःस्नान; प्रातःस्मरण ।

प्रादुर - प्रकट ।

उदा - प्रादुर्भाव ।

बहिर् - बाहर ।

उदा - बर्हिर; बहिष्कार ।

स - सहित ।

उदा - सगोत्र, सजातीय, सजीव, सरस, सावधान, सफल । (हिंदी = सचेत, सबेरा, सजग, सहेली ।)

सत् - अच्छा ।

उदा - सज्जन; सत्कर्म, सत्पात्र; सद्गुरू; सदाचार ।

सह - साथ ।

उदा - सहकारी, सहगमन; सहज; सहचर, सहानुभूति; सहादेर ।

स्व - अपना, निजी ।

उदा - स्वतंत्र; स्वदेश, स्वधर्म, स्वभाव, स्वभाषा, स्वराज्य, स्वरूप ।

स्वयं - खुद, अपने - आप ।

उदा - स्वयंभू; स्वयंवर; स्वयंसिद्ध; स्वयंसेवक ।

स्वर - आकाश, स्वर्ग ।

उदा - स्वर्लोक; स्वर्गंगा

(सूचना - कृ और भू (संस्कृत) धातुओं के पूर्व कई शब्द, विशेषकर संज्ञाएँ और विशेषण, ईकारान्त अव्यय होकर आते हैं । जैसे - स्वीकार; वर्गीकरण; द्रवीभूत; फलीभूत, भस्मीभूत; वशीभूत, समीकरण ।

10.2.3 हिंदी उपसर्ग :

ये उपसर्ग बहुधा संस्कृत उपसर्गों के अपभ्रंश है और विशेषकर तद्भव शब्दों के पूर्व आते हैं ।

अ = अभाव, निषेध ।

उदा अचेत; अजान, अथाह, अबेर, अलग ।

(अपवाद : संस्कृत मे स्वरादि के पहले 'अ' के स्थान में 'अन्' हो जाता है, परंतु हिंदी में 'अन्' व्यंजनादि शब्दों के पूर्व आता है । जैसे - अनगिनत, अनभल, अनहित, अनमोल)

(सूचना = 1) अनूठा, अनोखा शब्द संस्कृत के अपभ्रंश जान पडते हैं, जिनमें अन् उपसर्ग आया है ।

2) कभी-कभी यह प्रत्यय भूल से लगा दिया जाता है; जैसे - अलोप, अचपल।)

अध = आधा (सं - अर्द्ध)

उदा - अधकच्चा; अधखिला; अधपका, अधमरा, अधसेरा ।
('अधूरा' शब्द 'अधपूरा' का अपभ्रंश जान पड़ता है ।)

उन - एक कम (सं - ऊन) ।

उदा - उन्नीस, उनीस, उनचास; उनसठ, उनहत्तर, उन्नासी ।

औ - हीन, निषेध, (सं - अव)

उदा - औगुन; औघट, औढर, औसर ।

दु - बुरा, हीन (सं = दुर्)

उदा - दुकाल, दुबला ।

नि - रहित (सं - निर्)

उदा - निकम्मा; निखरा; निडर, निधडक, निरोगी; निहत्था ।

बिन - निषेध, अभाव ।

उदा - बिनजाने, बिनबोया, बिनब्याहा ।

भर - पूरा, ठीक ।

उदा - भरपेट, भरदौड, भरपुर, भरसक, भरकोस ।

10.2.4 उर्दू उपसर्ग :

अल - निश्चित ।

उदा - अलगरज, अलबत्ता ।

ऐन - ठीक, पूरा ।

उदा - ऐनजवानी, ऐनवक्त । (सूचना - यह उपसर्ग हिंदी 'भर' का पर्यायवाची है ।)

कम - थोड़ा हीन ।

उदा - कमउम्र; कमकीमत; कमजोर, कमबख्त; कमहिम्मत । (सूचना - कभी-कभी यह उपसर्ग एक दो हिन्दी शब्दों में लगा हुआ मिलता है । जैसे - कम समझ, कमधाम)

खुश - अच्छा ।

उदा - खुशबू, खुशदिल, खुशकिस्मत ।

गैर - भिन्न, विरुद्ध ।

उदा - गैरहाजिर; गैरमुल्क; गरवाजिब, गैरसरकारी ।

दर - में ।

उदा - दरअसल; दरकार; दरख्वास्त; दरहकीकत ।

ना - अभाव ।

उदा - नादान, नाउम्मिद; नापसंद, नाराज, नालायक ।

फी - में, पर, जैसे ।

उदा - फिलहाल (फी + अल + हाल - हाल में)

ब - ओर, में, अनुसार ।

उदा - बनाम, बइजलास; बदस्तूर, बदौलत ।

बद - बुरा ।

उदा - बदकार, बदकिस्मत; बदनाम; बदफैल, बदबू, बदमाश; बदहजमी।

बर - ऊपर ।

उदा - बरखास्त; बरदास्त; बरतरफ; बरवक्त; बराबर ।

बा - साथ ।

उदा - बाजाब्ता; बाकायदा ।

बिल - साथ

उदा - बिलकुल, बिलमुक्ता ।

बिला - उदा - बिलाकसूर, बिलाशक ।

बे - बिना ।

उदा - बेईमान; बेचारा, बेतरह, बेवकूफ; बेरहम ।
(सूचना, यह उपसर्ग बहुधा हिंदी में भी लगाया जाता है । जैसे - बेकाम, बेचैन, बेजोड, बेढौल ।)

ला - बिना, अभाव ।

उदा - लाचार, लावारिस; लाजवाब; लामजहब ।

सर - मुख्य ।

उदा - सरकार, सरताज; सरदार; सरनाम, सरहद, सरपंच ।

हम - साथ, समान ।

उदा - हमउम्र, हमदर्दी, हमराह; हमवतन ।

हर - प्रत्येक ।

उदा - हररोज, हरचीज; हरसाल; हरतरह ।
(सूचना - इस उपसर्ग का प्रयोग हिंदी शब्दों के साथ अधिकता से होता है । जैसे - हरकाम; हरघडी, हरदिन, हरएक, हरकोई ।)

10.2.4 अंग्रेजी उपसर्ग

सब - अधीन, भीतरी ।

उदा - सब इंस्पेक्टर, सब रजिस्ट्रार, सब जज, सब ऑफिस, सब कमेटी ।

हिंदी में अंग्रेजी शब्दों की भरत्ती हो रही है; इसलिए आज ही यह बात निश्चयपूर्वक नहीं कही जा सकती कि उस भाषा से आए हुए शब्दों में से कौन से शब्द रूढ और कौन से यौगिक है । अभी इस विषय में पूर्ण विचार की आवश्यकता भी नहीं हैं, इसलिए हिन्दी व्याकरण का यह भाग इस समय अधूरा ही रहेगा ।

10.3

प्रत्यय : ऐसे सहायक शब्द जो पदों के अंत में जुडते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं। जैसे.

आऊ (प्रत्यय) - खाऊ, गाँवाऊ

इयल (प्रत्यय) - मरियल, सडियल

आई (प्रत्यय) - लडाई, भलाई

(टिप्पणी - 'प्रत्यय' भी शब्दों के अंत में जुड़ते हैं और कुछ अवस्थाओं में विभक्ति परसर्ग तथा विभक्ति प्रत्यय भी शब्दों के अंत में जुडते हैं । अंतर यह है कि विभक्ति परसर्ग या विभक्ति प्रत्यय तो एक पद का संबंध दूसरे पद से स्थापित करने के लिए जोडे जाते हैं जबकि प्रत्यय नए शब्द का निर्माण करने के लिए ।)

जिस शब्द में प्रत्यय लगता है सामान्यतया उसका प्रकार भेद भी बदल जाता है ।

जैसे,

उठ (धातु)	+ आऊ (प्रत्यय)	= उठाऊ (संज्ञा विशेषण)
भला (संज्ञा विशेषण)	+ आई (प्रत्यय)	= भलाई (संज्ञा)
लड् (धातु)	+ ना (प्रत्यय)	= लड़ना (संज्ञा)
चौड़ा (संज्ञा - विशेषण)	+ आन (प्रत्यय)	= चौड़ान (संज्ञा)
आम (वस्तुवाचक प्रकृति निर्मित संज्ञा)	+ आवट (प्रत्यय)	= अमावट (वस्तुवाचक जींवनिकित संज्ञा)

नाक (वस्तुवाचक प्रकृति + एल (प्रत्यय) = नकेल (वस्तुवाचक जीव
निर्मित संज्ञा) निर्मित संज्ञा)

जो प्रत्यय नाम-पदों में लगाए जाते हैं उन्हें नाम प्रत्यय और जो धातुओं में लगाये जाते हैं उन्हें धातु-प्रत्यय कहते हैं ।

जैसे,

नाम प्रत्यय -

हाथ + एली = हथेली

साँप + ओला = सँपोला

धातु प्रत्यय

गिन + ती = गिनती

घट + ओतरी = घटोतरी

(टिप्पणी - हिंदी वस्तुतः प्रत्यय प्रधान भाषा है उपसर्ग प्रधान नहीं । संस्कृत मूलतः उपसर्ग प्रधान भाषा ही है । हिंदी में अनगिनत प्रत्यय है । यहाँ कुछ प्रमुख प्रत्ययों की सूची दी जा रही है ।)

(टीप्पणी - प्रत्ययों से बने हुए शब्दों के मुख्य भेद हैं - कृदंत और तद्धित । धातुओं से परे जो प्रत्यय लगाए जाते हैं, उन्हें कृत कहते हैं, और कृतप्रत्ययों के योग से जो शब्द बनते हैं, वे कृदंत कहलाते हैं । धातुओं को छोडकर शेष शब्दों के आगे प्रत्यय लगाने से जो शब्द तैयार होते हैं, उन्हें तद्धित कहते हैं ।)

(टिप्पाणी - दूसरी भाषाओं से विशेषकर संस्कृत से जो शब्द मूल शब्दों में कुछ विकार होने पर हिंदी में रुढ हुए हैं, वे तद्भव कहलाते हैं । दूसरे प्रकार के संस्कृत शब्दों को तत्सम कहते हैं । हिंदी में तत्सम शब्द भी आते हैं ।)

'अ' - यह प्रत्यय आकारान्त धातुओं में जोडा जाता है और इसके योग से भाववाचक संज्ञाए ननती हैं।

उदा :	लूटना	- लूट	जाँचना	- जाँच
	मरना	- मर	चमकना	- चमक
	पहुँचना	- पहुँच	समझना	- समझ
	देखना भालना	- देखभाल	उछलना कुदना	- उछलकुदल

(सूचना - हिंदी व्याकरण में इस प्रत्यय का नाम 'शून्य' लिखा गया है जिसका अर्थ यह है कि धातु भी नहीं जोड़ा जाता और उसी का प्रयोग भाववाचक संज्ञा के समान होता है । यथार्थ में यह बात ठीक है पर शून्य शब्द से होनेवाला भ्रम दूर हो जाए । इस 'अ' प्रत्यय के आदेश से धातु के अंत्य 'अ' का लोप हो जाता है।

10.3.1 संस्कृत प्रत्यय :

10.3.1.1 संस्कृत कृदंत :

अ (कर्तुवाचक) =

चुर (चुराना) - चोर ;	चर् (चलना) - चर् (दूत)
सृप् (सरकना) - सर्प ;	ग्रह (पकड़ना) - ग्राह
नद् (शब्द करना) - नद ;	धृ (धरना) - धर (पर्वत)

कृ (कारक) =

दा - दायक	नृत - नर्तक
मृ - मारक	तृ - तारक
पठ् - पाठक	लिख् - लेखक

अन् (कर्तृवाचक) =

नंद (प्रसन्न) - नंदन	रम् - रमण
मद् (पालन होना) - मदन	साध - साधन
भू - भवन	पाल - पालन
चर - चरण	भूष - भूषण

अनीय (योग्यार्थ)

दृश - दर्शनीय	स्मृ - स्मरणीय
रम - रमणीय	वि + चर - विचारणीय
मन - माननीय	कृ - करणीय

आ (भाववाचक)

पूज् - पूजा	कथ् - कथा
व्यथ् - व्यथा	शिक्ष् - शिक्षा

इष् - इच्छा　　चिंत - चिंता

अस् (विविध अर्थ में)

तम् - तमस्　　वच् - वचस्

तिज - तेजस्　　पयु - पयस्

छंद - छंदस्　　वसु - वयस्

आलु (गुणवाचक)

दय् - दयालु　　शी - शयालु

इ - (कर्तृवाचक)

हृ - हरि,　　कु - कवि

इन् - इस प्रत्यय के लगाने से जो कर्तृवाचक संज्ञाएँ बनती है, उनकी प्रथमा का एकवचन ईकारांत होता है । हिंदी में यही नेकारांत रूप प्रचलित है। इसलिए यहाँ ईकारांत ही के उदाहरण दिये जाते हैं ।

त्यज् - त्यागी;　　दुष - दोषी;　　युज् - योगी

वद् - वादी;　　द्वेष - द्वेषी;　　उप+कृ - उपकारी

उ (कर्तृवाचक) =

भिक्ष - भिक्षु

इच्छ - इच्छु

साध - साधु

उक (कर्तुवाचक)

भिक्ष - भिक्षुक

भू - भावुक

कम् - कामुक

उर (कर्तृवाचक)

आस् - आसुर

भज् - भंगुर

चक्षु - चक्षुस्

त - इस प्रत्यय के योग से भूतकालिक कृदंत बनते हैं । हिंदी में इनका प्रचार अधिकता से है ।

गम् - गत	भू - भूत	कृ - कृत
मृ - मृत	मद - मत्त	जन - जात
हन् - हत	च्यु - च्युत	ख्या - ख्यात
त्यज - त्यक्त	श्रु - श्रुत	तृप् - तृप्त

तव्य (योग्यार्थक)

कृ - कर्तव्य	भू - भवितव्य	ज्ञा - ज्ञातव्य
दृश - द्रष्टव्य	श्रु - श्रोतव्य	दा - दातव्य

ति (भाववाचक)

कृ - कृति;	ञ्री - प्रीति;	शक् - शक्ति
स्मृ - स्मृति;	री - रीति;	स्था - स्थिति

मन् (विविध अर्थ में)

दा - दाम	कृ - कर्म	सि - सीमा
धा - धाम	छद् - छद्म	चर - चर्म
बृह - ब्रह्म	जन् - जन्म	

(सूचना - ऊपर लिखे आकारांत शब्द 'मन्' प्रत्यय के न् का लोप करने से बने है। हिंदी में मूल व्यंजनात रूप का प्रचार न होने के कारण प्रथमा के एक वचन के रूप दिए गए है ।)

मान =

यह प्रत्यय यत् के समान वर्तमानकालिक कृदंत का है । इस प्रत्यय के योग से बने हुए शब्द हिंदी में बहुधा संज्ञा अथवा विशेषण होते हैं ।

यज् - यजमान;	वृत - वर्तमान
वि + रज - विराजमान ;	विद् - विद्यमान
दीप - देदीप्यमान;	ज्वल् - जाज्वल्यमान

य (योग्यार्थक)

कृ - कार्य;	त्यज् - त्याज्य;	वध - वध्य
पठ - पाठय ;	वच् - वाच्य;	दा - देय

क्षम् - क्षम्य; गम् - गम्य; पद् - पद्य

र् (गुणवाचक)

नम् - नम्र, हिंस - हिंस्र

वर (गुणवाचक)

भास - भास्वर, स्था - स्थावर ईश - ईश्वर नश - नश्वर

स + आ (इच्छाबोधक)

पा - पिपासा

ज्ञा - जिज्ञासा

लल् - लालसा

मन् - मीमांसा

10.3.1 संस्कृत तद्धित प्रत्यय

अ - (अपत्यवाचक)

रघु - राघव	पांडु - पांड्व	वसुदेव - वासुदेव
पर्वत - पार्वती	पृथा - पार्थ	सुमित्र - सुमित्रा

अ (गुणवाचक)

शिव - शैव,	विष्णु - वैष्णव,	मनु - मानव
पृथिवी - पार्थिव,	व्याकरण - वैयाकरण	

अ (भाववाचक) - इस अर्थ में यह प्रत्यय बहुधा आकारांत, इकारांत और उकारांत शब्दों में लगता है ।

कुशल - कौशल	पुरुष - पौरुष;	मुनि - मौन
शुचि - शौच	लघु - लाघव;	गुरु - गौरव

अक (उसको जाननेवाला) -

मीमांसा - मीमांसक; शिक्षा - शिक्षक

आमह (उसका पिता)

पितृ - पितामह; मातृ - मातामह

इ (उसका पुत्र)

दशरथ - दाशरथी; मरुत - मारुति

इक (उसको जाननेवाला)

तर्क - तार्किक; अलंकार - अलंकारिक, न्याय - नैयायिक

(गुणवाचक)

वर्ष - वार्षिक ; दिन - दैनिक ; मास - मासिक,
लोक - लौकिक ; धर्म - धार्मिक, सेना - सैनिक,
समाज - सामाजिक ; शरीर - शारीरिक ; पुराण - पौराणिक

इत (गुणवाचक)

पुष्प - पुष्पित ; फल - फलित ; दुःख - दुःखित,
कंटक - कंटकित ; कुसुम - कुसुमित ; पल्लव - पल्लवित,
हर्ष - हर्षित; आनंद - आनंदित; प्रतिबिंब - प्रतिबिंबित

इन् (कर्तृवाचक)

इस प्रत्ययवाले शब्दों का प्रथमा के एक वचन में न का लोप होने पर ईकारांत रूप हो जाता है । यही रूप हिंदी में प्रचलित है, इसलिए यहाँ इसी के उदाहरण दिए जाते है । यह प्रत्यय बहुधा आकारांत शब्दों में लगाया जाता है ।

शास्त्र - शास्त्री; हल - हली, तरंग - तरंगिणी,
धन - धनी; अर्थ - अर्थी; पक्ष - पक्षी,
क्रोध - क्रोधी ; योग - योगी; सुख - सुखी

इन - यह प्रत्यय फल, मल और बर्ह में लगाया जाता है ।

फल - फलिन ; मल - मलिन, बर्ह - बर्हिण (मोर)

इम (गुणवाचक)

अग्र - अग्रिम; अंत - अंतिम; पश्चात् - पश्चिम

इमा - (भाववाचक)

महत् - महिमा, गुरु - गरिमा, लघु - लघिमा
रक्त - रक्तिमा; अरुण - अरुणिमा; नील - नीलिमा

इय (गुणवाचक)

यज - यज्ञिय, राष्ट्र - राष्ट्रीय, क्षत्र - क्षत्रिय

इष्ठ (श्रेष्ठता के अर्थ में)

बली - बलिष्ठ ; स्वाद - स्वादिष्ठ ;

गुरु - गरिष्ठ; श्रेयस् - श्रेष्ठ

ईन (गुणवाचक)

ग्राम - ग्रामीण, पार - पारीण

ईय (संबंधवाचक)

त्वत् - त्वदीय तद् - तदीय

मत् - मदीय भवत् - भवदीय

नारद - नारदीय पाणिनि - पाणिनिय

स्व, पर और राजन इन शब्दों में 'ईय' प्रत्यय के पूर्व क् का आगम होता है।
जैसे - स्वकीय, परकीय राजकीय

एय (अपत्यवाचक) =

विनता - वैनतेय भगिनी - भागिनेय

कुंती - कौंतेय मृकंड - मार्कण्डेय

गंगा - गांगेय राधा - राधेय

(विविध अर्थ में) -

अग्नि - आग्नेय; पुरुष - पौरुषेय

पथिन् - पाथेय; अतिथि - अतिथेय

क (ऊनवाचक)

पुत्र - पुत्रक, बाल - बालक

वृक्ष - वृक्षक, नौ - नौका

पंच - पंचक; सप्त - सप्तक

अष्ट - अष्टक ; दश - दशक

तन (कालसंबंधवाचक)

सदा - सनातन पुरा - पुरातन

नव - नूतन प्राच - प्राक्तन

अद्य - अद्यतन चिर - चिरंतन

त्य (संबंधवाचक)

दक्षिण - दाक्षिणात्य पश्चात् - पाश्चात्य

अमा - अमात्य नि - नित्य

ता (भाववाचक) =

गुरु - गुरुता, लघु - लघुता, कवि - कविता,

मधुर - मधुरता, सम - समता, आवश्यक - आवश्यकता,

नवीन - नवीनता, विशेष - विशेषता, जन - जनता,

ग्राम - ग्रामता, बंधु - बंधुता

मय (विकार और व्याप्ति के अर्थ में)

काष्ठमय; विष्णुमय, जलमय, तेजोमय ।

य (भाववाचक)

मधुर - माधुर्य चतुर - चातुर्य पंडित - पांडित्य

अधिपाति-आधिपत्य धीर - धैर्य वीर - वीर्य

अधीन - स्वाधीन; पराधीन, देवाधीन, भाग्याधीन ।

अंतर - देशांतर, भाषांतर, मन्वंतर, अर्थांतर, रूपांतर ।

अन्वित - दुःखान्वित, दोषान्वित, भयान्वित, लोभान्वित ।

अध्यक्ष - कोशाध्यक्ष, सभाध्यक्ष, दानाध्यक्ष ।

अतीत - कालातीत, गुणातीत, आशातीत, स्मरणातीत ।

अनुरूप - गुणानुरूप, योग्यतानुरूप, आज्ञानुरूप ।

अनुसार - कर्मानुसार, भाग्यानुसार, समयानुसार ।

आतुर - प्रेमातुर, कामातुर, चिंतातुर ।

आकुल - चिंताकुल, भयाकुल, शोकाकुल, प्रेमाकुल ।

आचार - देशाचार, पापाचार, शिष्टाचार, कुलाचार ।

आशय - महाशय, नीचाशय, सुद्राशय, जलाशय ।

कार - स्वर्णकार, चर्मकार, ग्रंथकार, कुंभकार, नाटककार ।

गम - विहंगम, दुर्गम, सुगम, अगम, सगम, हृदयंगम ।

गत - मनोगत, दृष्टिगत, कंठगत, व्यक्तिगत ।

चिंतक - शुभचिंतक, हितचिंतक, लाभचिंतक ।

दायक - सुखदायक, गुणदायक, दुखदायक, भयदायक ।

नाशक - कफनाशक, कृमिनाशक, धननाशक, विघ्ननाशक ।

रहित - ज्ञानरहित, धर्मरहित, प्रेमरहित, भावरहित ।

हर - पापहर, रोगहर ।

हीन - गुणहीन, धनहीन, मनिहीन, विद्याहीन, शक्तिहीन ।

ज्ञ - शास्त्रज्ञ, धर्मज्ञ, सर्वज्ञ, मर्मज्ञ, विज्ञ, अभिज्ञ

10.3.2 हिंदी प्रत्यय

10.3.2.1 हिंदी कृदंत :

'अ' - यह प्रत्यय आकारांत धातुओं में जोडा जाता है और इसके योग से भाववाचक संज्ञाएँ बनती है । जैसे,

लूटना - लूट	मरना - मार	जाँचना - जाँच,
चमकना - चमक,	पहुँचना - पहुँच,	समझना - समझ
देखना - भालना - देखभाल;		उछलना कूदना - उछलकूद

(सूचना - हिंदी व्याकरण में इस प्रत्यय का नाम 'शून्य' लिखा गया है, जिसका अर्थ यह है कि धातु भी नहीं जोडा जाता और उसी का प्रयोग भाववाचक संज्ञा के समान होता है । यथार्थ में यह ठीक है, पर शून्य के बदले 'अ' इसलिए लिखा है कि शून्य शब्द से होनेवाला भ्रम दूर हो जाए । इस 'अ' के आदेश से धातु के साथ अंत्य 'अ' का लोप समझना चाहिए ।)

इस प्रत्यय से कहीं कहीं धातु के उपांत्य 'अ' की वृद्धि होती है । जैसे,

अड़ना - आड़	लगना - लाग
चलना - चाल	फटना - फाट
बढ़ना - बाढ़	

आ - इस प्रत्यय के योग से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं । जैसे,

घेरना - घेरा	फेरना - फेरा	जोडना - जोडा
झगडना - झगडा	छापना - छापा	रगडना - रगडा
भटकना - भटका	उतारना - उतारा	तोडना - तोडा

भूतकालिक कृदंत इसी प्रत्यय के योग से बनाए जाते है । जैसे

झूलना - झूला, धोना - धोया, खींचना - खींचा
पढ़ना - पढ़ा , बैठना - बैठा

आऊ - यह प्रत्यय किसी किसी धातु में योग्यता के अर्थ में लगता है; जैसे -

टिकना - टिकाऊ ; बिकना - बिकाऊ
चलना - चलाऊ , दिखना - दिखाऊ
जलना - जलाऊ गिरना - गिराऊ

किसी किसी धातु में इस प्रत्यय का अर्थ कर्तृवाचक होता है । जैसे -

खाना - खाऊ उड़ाना - उड़ाऊ जुझना - जुझाऊ

आन (भाववाचक)

उठना - उठान उड़ना - उड़ान
लगना - लगान मिलना - मिलान
चलना - चलान

आवट (भाववाचक)

थकना - थकावट रुकना - रुकावट
बनना - बनावट सजना - सजावट
दिखाना - दिखावट लगना - लगावट
मिलना - मिलावट कहना - कहावत

आहट (भावेवाचक)

चिल्लाना - चिल्लाहट घबराना - घबराहट
गड़गड़ाना - गड़गड़ाहट भनभनाना - भनभनाहट
गुर्राना - गुर्राहट जगमगाना - जगमगाहट

(सूचना - यह प्रत्यय बहुधा अनुकरणवाचक शब्दों के साथ आता है और 'शब्द' के अर्थ में इसका स्वतंत्र प्रयोग भी होता है ।

इयल (कर्तृवाचक)

अड़ना - अड़ियल सड़ना - सड़ियल
मरना - मरियल बढ़ना - बढ़ियल

ई (भाववाचक)

हँसना - हँसी	कहना - कही
बोलना - बोली	मरना - मरी
धमकना - धमकी	घुड़कना - घुड़की

इया (भाववाचक)

जड़ना - जड़िया	लखना - लखिया
धुनना - धुनिया	निवारना - निवारिया
बढ़ना - बढ़िया	घटना - घटिया

ऊ (कर्तृवाचक)

खाना - खाऊ	चलना - चालू
उतरना - उतारू	मारना - मारु
काटना - काटू	घटना - घटिया

ए - यह प्रत्यय सब धातुओं में लगता है और इसके योग से अव्यय बनते है। इससे क्रिया की समाप्ति का बोध होती है, इसलिये इससे बने हुए शब्दों को बहुधा पूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत कहते हैं । इन अव्ययों का प्रयोग क्रियाविश्लेषण के समान तीनों कालों में होता है ।ये अव्यय संयुक्त क्रियाओं में भी आते हैं।

उदा - देखें, पाए; लिए, समेटे, निकले ।

एरा (कर्तृवाचक)

कमाना - कमेरा	लूटना - लुटेरा
निबटाना - निबटेरा	बसना - बसेरा

ओड़ा (कर्तृवाचक)

भागना - भगोड़ा	हँसना - हँसोड़ा

ओता, औती (भाववाचक)

समझाना - समझौता	मनाना - मनौती
छुड़ाना - छुड़ौती	चुकाना - चुकौता, चुकौती
कसना - कसौटी	चुनना - चुनौती

औना, औनी, आवनी (विविध अर्थ में)

खेलना - खिलौना	बिछाना - बिछौना

ओढना - उढ़ौना पहराना - पहरौनी
छाना - छावनी ठहरना - ठहरौनी

क (भाववाचक, स्थानवाचक)

बैठना - बैठक घोलना - घोलक
मारना - मारक जाँचना - जाँचक

(सूचना - किसी किसी अनुकरणवाचक मूल अव्यय के आगे इस प्रत्यय के योग से धातु भी बगते हैं;
जैसे - खड़ - खड़कना; धड़ - धड़कना
तड़ - तड़कना ; खट - खटकना)

कर, करके - ये प्रत्यय सब धातुओं में लगते हैं और इनके योग से अव्यय बनते है ।

इन प्रत्ययों में 'कर' अधिक शिष्ठ समझा जाता है और गद्य में बहुधा इसी का प्रयोग होता है । इन प्रत्ययों से बने हुए अव्यय पूर्वकालिक कृदंत कहलाते हैं और उनका उपयोग क्रियाविशेषण के समान तीनों कालों में होता है । पूर्वकालिक कृदंत अव्यय का उपयोग संयुक्त क्रियाओं की रचना में होता है ।

उदा - देकर, जाकर, दौड करके, भाग करके ।

का (विविध अर्थ में) - छीलना - छिलका
की (विविध अर्थ में) - फिरना - फिरकी; फूटना-फुटकी
त (भाववाचक)

बचना - बचत खपना - खपत
पड़ना - पड़त रँगना - रंगत

ता - इस प्रत्यय के द्वारा सब धातुओं में वर्तमानकालिक कृदंत बनते हैं, जिनका प्रयोग विशेषण के समान होता है और जिनमें विशेष्य के लिंग वचन के अनुसार विकार होता है ।

उदा - जाता, आता, देखता, करता ।

ती (भाववाचक)

बढ़ना - बढ़ती घटना - घटती चढ़ना - चढ़ती

भरना - भरती	चुकना - चुकती	गिनना - गिनती
झड़ना - झड़ती	पाना - पावती	फबना - फबती

न (भाववाचक)

चलना - चलन	कहना - कहन	
लेना - देना - लेन देन		खाना - पीना - खानपान
झाड़ना - झाड़न,	बेलना - बेलन;	जमाना - जामन ।

ना - इस प्रत्यय के योग से क्रियार्थक कर्मवाचक और करणवाचक संज्ञाएँ बनती हैं । हिंदी में इस कृदंत से धातु का निर्देश करते हैं - जैसे - बोलना, लिखना, देना, आना ।

वाला - यह प्रत्यय सब क्रियार्थक संज्ञाओं में लगता है और इसके योग से कर्तृवाचक विशेषण और संज्ञाएँ बनती है । इस प्रत्यय के पूर्व अंत्य 'आ' के स्थान में 'ए' हो जाता है । जैसे - रोकनेवाला, जानेवाला, खानेवाला, देनेवाला ।

वैया - इस प्रत्यय का प्रयोग एकाक्षरी धातुओं के साथ अधिक होता है । जैसे - गवैया, छवैया, रखवैया, दिवैया ।

सार - मिलनसार

हार - मरनहार, होनहार, जाननहार ।

हा (कर्तृवाचक)

काटना - कटहा,	मारना - मरलहा,	चराना - चरवाहा

10.3.2.2 हिंदी तद्धित

आ - यह प्रत्यय कई एक संज्ञाओं में लगाकर विशेषण बनते हैं, जैसे

भूख - भूखा	प्यास - प्यासा	मैल - मैला
प्यार - प्यारा	खार - खारा	

कभी कभी एक संज्ञा से दूसरी भाववाचक अथवा समुदायवाचक संज्ञा बनती हैं; जैसे -

जोड - जोड़ा;	चूर - चूरा	सराफ - सराफ़ा
बोझ - बोझा ।		

औं - यह, वह, जो और कौन के परे इस प्रत्यय के योग से स्थानवाचक क्रिया विशेषण बनते हैं; जैसे - यहाँ, वहाँ, जहाँ, कहाँ, तहाँ ।

आई - इस प्रत्यय के योग से विशेषणों और संज्ञाओं से भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं ; जैसे,

भला - भलाई, बुरा - बुराई, ढीठ - ढिठाई, चतुर - चतुराई, चिकना - चिकनाई, पंडित - पंडिताई; ठाकुर - ठकुराई

(सूचना - इस प्रत्यय से कुछ जातिवाचक संज्ञाएँ भी बनती हैं - मिठाई, खटाई, चिकनाई, ठंढाई)

आऊ - (गुणवाचक)

आगे - अगाऊ	घर - घराऊ
बाट - बटाऊ	पंडित - पंडिताऊ

आका - अनुकरणवाचक शब्दों से इस प्रत्यय के द्वारा भाववाचक संज्ञाएँ बनती हैं - जैसे -

सन - सनाका धम - धमाका सड़ - सडाका

भड - भड़ाका धड़ - धड़ाका

आना - (स्थानवाचक)

राजपूत - राजपूताना	हिंदु - हिंदुआना
तिलंगा - तिलंगाना	उड़िया - उड़ियाना

आर - यह प्रत्यय संस्कृत के 'कार' प्रत्यय का अपभ्रंश है ।

उदा - कुम्हार (कुमकार) ; लुहार

सुनार (सुवर्णकार) ; चमार

कभी कभी इस प्रत्यय से विशेषण बनते हैं

जैसे - दूध - दुधार, गाँव - गंवार

आरी, आरा आड़ा - ये 'आर' के ही पर्यायी है और थोडे से शब्दों में लगते हैं। जैसे -

पूजा - पूजारी; खेल - खिलाडी

बनिज - बनिजारा ; घसियारा, भिखारी, हत्यारा, भठियरा, कोठारी ।

आलू

झगड़ा - झगड़ालू; लाज - लजालू; डर - डरालू

आवट (भाववाचक) - अमावट, महावाट ।

आस (भाववाचक) - मीठा - मिठास; खट्टा - खटास;

आहट (भाववाचक) - कड़ुवा - कड़ुवाहट; चिकना - चिकनाहट, गरम - गरमाहट

इया - कुछ संज्ञाओं में इस प्रत्यय के द्वारा कर्तृवाचक संज्ञाएँ बनती हैं । जैसे,

आढत - आढ़तिया;	मुख - मुखिया
बेखड़ा - बखेड़िया;	दुख - दुखिया
रस - रसिया;	रसोई - रसोइया

(स्थानवाचक)

मथुरा - मथुरिया,	कलकत्ता - कलकतिया
सखार - सखरिया,	कन्नोज - कन्नोजिया

(ऊनवाचक)

खाट - खटिया,	फोड़ा - फोड़िया
डब्बा - डबिया,	गठरी - गठरिया
आम - अँबिया,	बेटी - बिटिया

ईकारांत पुल्लिंग और स्त्रीलिंग संज्ञाओं में अनादर अथवा दुलार के लिये यह प्रत्यय लगाते हैं - जैसे,

हरी - हरिया	तेली - तेलिया
धोबी - धोबिया	राधा - रधिया
दुर्गा - दुर्गिया	माई - मैया
भाई - भैया	सिपाही - सिपाहिया

कोई कोई व्यापारवाचक संज्ञाएँ इसी प्रत्यय के योग से बनी है, जैसे - तेली, माली, धोबी, तमोली ।

किसी किसी विशेषणों में यह प्रत्यय लगाकर भाववाचक संज्ञाएँ बनाते हैं ।

जैसे - गृहस्थ - गृहस्थी; बुद्धिमान - बुद्धिमानी, सावधान - सावधानी, चतुर - चातुरी ।

ईला - इस प्रत्यय के योग से विशेषण बनते हैं ।

जैसे - रंग - रँगीला;	छवि - छबीला;	लाज - लजीला
रस - रसीला,	जहर - जहरीला;	पानी - पनीला

ऊ - इस प्रत्यय के योग से विशेषण बनते हैं ।

ढाल - ढालू; घर - घरु; बजार - बाजारू

पेट - पेटू; गरज - गरजू; नाक - नक्कू (बदनाम)

ए - कई एक आकारांत संज्ञाओं और विशेषणों में यह प्रत्यय लगाने से अव्यय बनते हैं, जिनका प्रयोग संबंधसूचक अथवा क्रियाविशेषण के समान होता है, जैसे -

सामना - सामने; धीरा - धीरे; लेखा - लेखे

तड़का - तड़के; जैसा - जैसे, पीछा - पीछे

एरा - (व्यापारवाचक)

साँप - सँपेरा; काँसा - कसेरा; चित्र - चितेरा;

लाख - लखेरा ।

(गुणवाचक) बहुत - बहुतेरा; धन - धनेरा ।

(संबंधवाचक) काका - ककेरा, मामा - ममेरा

फूफा - फुफेरा; चाचा - चचेरा

मौसा - मौसेरा ।

ओला - सँपोला, खटोला, मसोला, गढ़ोला ।

क - अव्यय से नाम -

धड - धड़क, भड़ - भड़क; धम - धमक ।

समुदायवाचक - चौक, पंचक, सप्तक, अष्टक

का - छोटा - छुटका, बड़ा - बड़का, चुप - चुपका, छाप - छपका

(समुदायवाचक) - इक्का, दुक्का, चौका ।

डा, डी - (ऊनवाचक)

चाम - चमडा बच्छ - बछडा

दुख - दुखडा मुख - मुखड़ा

टूक - टुकड़ा लँग - लँगडा

टाँग - टँगडी पलँग - पलँगडी

पंख - पँखडी आँत - अँतड़ी

त (भाववाचक)

चाह - चाहत, रंग - रंगत, मेल - मिल्लत ।

पन (भाववाचक)

काला - कालापन; लड़का - लड़कपन, बाल - बालपन,
गँवार - गँवारपन, पागल - पागलपन

पा (भाववाचक)

बूढा - बुढापा, राँड - रँडापा, बहिन - बहिनापा,
मोटा - मोटापा

ला (गुणवाचक)

आग - अगला, पीछे - पिछला, माँझ - माँझला,
लाड - लाड़ला ।

वाँ (क्रमवाचक)

पाँचवाँ, सातवाँ, नवाँ, दसवाँ ।

हरा (परत के अर्थ में)

इकहरा; दुहरा; तिहरा, चौहरा ।

हा (गुणवाचक)

हलवाहा; पनिहा, कबिराहा

वास्तव में हिंदी प्रत्यय अनेकों हैं । यहाँ कुछ प्रमुख परिचित हिंदी प्रत्यय दिये गए है ।

10.3.3 उर्दू प्रत्यय

इश (भाववाचक)

पखर (पालना) = पकरिश
कोश (उपाय करना) = कोशिश
माल (मलना) = मालिश
फरमाय (आज्ञा देना) = फरमाइश

ई (भावावाचक)

रफ्तन (जाना) = रफ्तनी
आमदन (आना) = आमदनी

ई (संज्ञा)

खुश = खुशी नवाब = नवाबी

नेक = नेकी　　दोस्त = दोस्ती

बद = बदी　　दलात = दलाली

(विशेषणों में 'ई' प्रत्यय लगाने से भाववाचक संज्ञाए बनती है ।)

कार - इससे कर्तृवाचक संज्ञाएँ बनती है ।

पेश - पेशकार;　बद - बदकार,　काश्त - काश्तकार,

सलाह - सलाहकार ।

गर - (कर्तृवाचक)

सौदा - सौदागर,　कार - कारीगर,　कलई - कलईगर ।

गार - मदद - मददगार; याद - यादगार,　खिदमत - खिदमतगार,

गुनाह - गुनहगार ।

आनह (आना) - विशेषण

साल - सालाना,　रोज - रोजाना

मर्द - मर्दाना,　जन - जनाना ।

ईन -

रंगीन, शौकीन, नमकीन, संगीन ।

अंदाज

बर्क - बर्कंदाज, तीर - तीरंदाज, गोला - गोलंदाज ।

दार (रखनेवाला)

जमींदार, चोबदार, दूकानकार, फौजदार, तरहदार, मालदार ।

नवीस (लिखनेवाला)

अरजीनवीस; स्याहनवीस, वासिलबाकीनवीस, चिरनवीस ।

साज (बनानेवाला)

जालसाज, जीनसाज, घडीसाज ।

बाज (खेलनेवाल, प्रेमकरनेवाला)

दगाबाज, नशेबाज, शतरंजबाज ।

संज्ञाओं के नीचे लिखे शब्दों और प्रत्ययों को जोडने से स्थानवाचक संज्ञाएँ बनती है -

खाना (स्थान) -

कारखाना, दौलतखाना, कैदखाना, गाडीखाना, दवाखाना

गाह -

ईदगाह, शिकारगाह, बंदरगाह, चरागाह, दरगाह ।

उर्दू प्रत्ययों के अंतर्गत भी केवल प्रमूख एवं प्रचलित प्रत्ययों का ही विचार किया गया है ।

10.4 उपसंहार :

प्रस्तुत अध्याय में आपने देखा कि उपसर्ग और प्रत्यय अनेकों है । सबसे पहले हमने देखा कि उपसर्ग ऐसे सहायक शब्द हैं जो शब्दों के आरंभ में जुडते हैं । हमने यह भी देखा कि संस्कृत तथा उर्दू में तत्सम तथा तद्भव ऐसे शब्द अवश्य है जो मूलतः उपसर्गों से युक्त है । अध्ययन की सुविधा के लिए हमने संस्कृत, उर्दू, हिंदी तथा अंग्रेजी के ऐसे उपसर्गों को उदाहरण स्वरूप रखा है । जिससे आप आसानी से उपसर्गों से बने हुए शब्दों को समझ पायेंगे । इसीप्रकार प्रत्ययों का भी अध्ययन किया है । संस्कृत, हिंदी तथा उर्दू में अनेक ऐसे शब्द है जो प्रत्ययों के योग से बनते है । उसकी एक सूची ही यहाँ प्रस्तुत है ।

10.5 बोध प्रश्न :

1) उपसर्ग और प्रत्यय में क्या अंतर है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।

2) निम्नलिखित उपसर्गों से युक्त दो - दो शब्द बनाइए -

सु, वि, उप, पर, सम्, तत्, सत, दुर् ।

3) निम्नलिखित यौगिक शब्दों से उपसर्ग अलग कीजिए -

अध्यक्ष, उन्नति, पराजय, प्रत्यक्ष, समादर, प्रेरणा

4) नीचे लिखे उपसर्गों का अर्थ बताकर उदाहरण दीजिए -

अधि, अनु, निर्, कु, सह, अना : अध, बे ला ।

5) निम्नलिखित प्रत्ययों की सहायता से शब्द बनाइए ।

- खाना, - दान, - आई, - अन, - त, - आनी, - अनीय, - आलु, - ई, - आवट, - वान्, - इमा, - इयल, - मय, - इय, - इक ।

6) निम्नलिखित शब्दों मे लगे प्रत्यय अलग कीजिए ।

भूखा, कमाऊ, झगडालू, सौतेला, धोखेबाज, मिलनसार, बुढापा, फेरा, लिखावट, चिल्लाहट, मनौजी, गिनती, टिकाऊ, मरियल, लुटेरा ।

10.6 सहायक पुस्तके :

1. हिन्दी व्याकरण - कामताप्रसाद गुरु
2. परिष्कृत हिंदी व्याकरण - बदरीनाथ कपूर
3. व्यावहारिक हिन्दी व्याकरण तथा रचना - डा. हरदेव बाहरी

इकाई - 11
अर्थ - कृदंत और तद्धित

इकाई की रूपरेखा :

11.0 उद्देश्य

11.1 प्रस्तावना

11.2 अर्थ

- 11.2.1 अर्थ की परिभाषा
- 11.2.2 काल और अर्थ
- 11.2.3 अर्थ का वर्गीकरण
  - 11.2.3.1 निश्चयार्थक
  - 11.2.3.2 संभावनार्थ
  - 11.2.3.3 संदेहार्थ
  - 11.2.3.4 आज्ञार्थ
  - 11.2.3.5 संकेतार्थ

11.3 कृदंत

- 11.3.1 कृदंत की परिभाषा
- 11.3.2 कृदंत - वर्गीकरण
  - 11.3.2.1 विकारी कृदंत
    - 11.3.2.1.1 क्रियार्थक संज्ञा
    - 11.3.2.1.2 वर्तमानकालिक संज्ञा
    - 11.3.2.1.3 भूतकालिक कृदंत
    - 11.3.2.1.4 कर्तृवाचक कृदंत
  - 11.3.2.2 अविकारी कृदंत
    - 11.3.2.1.1 अपूर्व क्रियाद्योतक
    - 11.3.2.2.2 पूर्ण क्रियाद्योतक
    - 11.3.2.2.3 तात्कालिक कृदंत
    - 11.3.2.2.4 पूर्वकालिक कृदंत

11.4 तद्धित

11.4.1 संस्कृत तद्धित

11.4.2 हिंदी तद्धित

11.5 उपसंहार

11.6 बोध प्रश्न

11.7 सहायक ग्रंथ

11.0 उद्देश्य :

प्रस्तुत ईकाई में आप क्रिया के अर्थ, कृदंत तथा तद्धित आदि का परिचय प्राप्त करेंगे ।

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त आप

- अर्थ की परिभाषा जान पायेंगे
- अर्थों के भेद समझ पायेंगे,
- कृदंत की परिभाषा समझ पायेंगे
- कृदंतों के प्रयोग और उनके प्रकारों का परिचय जान पायेंगे ।
- तद्धित का अर्थ प्रकार समझ पायेंगे ।

11.1 प्रस्तावना :

संज्ञा सर्वनाम और विशेषण की ही भाँति क्रिया भी विकारी शब्द है, अतः इसमं भी संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण की भाँति विकार या परिवर्तन होते हैं। वाक्य में क्रिया के व्यापार का बोध होता है । कार्य के व्यापार का भिन्न - भिन्न रूपों में उल्लेख करने के लिए क्रिया में परिवर्तन करना आवश्यक होता है। क्रिया में ये परिवर्तन वाच्य, अर्थ, काल, लिंग, वचन, पुरुष और प्रयोग के कारण होते हैं, अतः वाक्य में क्रिया के शुद्ध प्रयोग के लिए इन सबका विशेष महत्व होता है। हम यहाँ प्रमुख रूप से अर्थ के महत्व पर प्रकाश डालेंगे।

11.2.1 अर्थ की परिभाषा

"क्रिया के जिस रूप से विधान करनें की रीति का बोध होता है, उसे अर्थ कहते हैं ।"

क्रिया के अर्थ से हमें यह [illegible]ता है कि क्रिया का कोई व्यापार निश्चित रूप से हो रहा है या उसके होनें में सन्देह या उसके होने की संभावना है या उसेक लिए कोई आज्ञा या संकेत दिया जा रहा है । उदाहरण के लिए 'पढ़ना' क्रिया के साधारण रूप निम्नलिखित अर्थों में व्यक्त किये जा सकते हैं

1. वह उपन्यास पढ़ता है ।
2. संभव है वह उपन्यास पढे ।
3. तुम उपन्यास पढ़ो ।
4. वह उपन्यास पढ़ता होगा ।
5. वह उपन्यास पढ़ता तो अच्छा होता ।

उपर्युक्त वाक्यों में पढ़ता है, पढ़े, पढो, पढ़ता होगा, और पढ़ता क्रियाओं द्वारा 'पढ़ना' क्रिया का भिन्न-भिन्न प्रकार से विधान किया गया है । इसी प्रकार हम 'जाना' क्रिया को लेते हैं -

1. लड़का जाता है ।
2. लड़का जावे ।
3. तुम जाओ ।
4. यदि लड़का जाता तो अच्छा होता ।
5. लड़का जाता होगा ।

इन वाक्यों में भी जाता है, जावे, जाओ, जाता और जाता होगा क्रियाओं द्वारा 'जाना' क्रिया का भिन्न भिन्न प्रकार से विधान किया गया है ।

11.2.2 काल और अर्थ

जैसा कि गुरु कहते हैं, हिंदी के अधिकांश व्याकरणों में इस रूपांतर का विचार अलग नहीं किया गया, किंतु काल के साथ मिला दिया गया है । क्रिया के रूपों से केवल समय की पूर्ण अथवा अपूर्ण अवस्था का ही बोध नहीं होता, किंतु निश्चय, संदेह, संभावना, आज्ञा संकेत आदि का भी होता है । इन रूपों से काल का भी बोध होता है और अर्थ का भी और किसी रूप में ये दोनों इतने

मिले रहते हैं कि उसको अलग करके बताना भी कठिन हो जाता है; जैसे,

1) लड़का पुस्तक लाता है ।

2) वहाँ न जाना पुत्र ।

3) बच्चा क्या समझता है ?

इन वाक्यों में 'लाना', 'जाना', 'समझना' आदि क्रियायें केवल काल का ही बोध करा रही है या निश्चय, आज्ञा या निबेध का - अर्थात अर्थ का । कदाचित इसी कठिनाई से बचने के लिये काल और अर्थ को मिलाकर क्रिया के रूपों का वर्गीकरण करते हैं । 'क्रिया' का 'काल' समय के अतिरिक्त व्यापार की व्यवस्था भी बताता है, अर्थात व्यापार समाप्त हुआ या नहीं हुआ होगा अथवा उसेक होने में संदेह है । 'काल' के लक्षण को इतना व्यापक कर देने पर भी आज्ञा, संभावना और संकेत आदि अर्थ बच ही जाते हैं, और इन अर्थों के अनुसार भी क्रिया के रूपों का वर्गीकरण करना आवश्यक होता है । इसलिए समय और पूर्णता अथवा अपूर्णता के सिवा क्रिया के जो अर्थ होते हैं, उनका वर्गीकरण निम्नलिखित हैं ।

11.2.3 अर्थ का वर्गीकरण :

क्रिया के अनेक अर्थ या भाव हो सकते हैं । रूप रचना की दृष्टि से हिन्दी में क्रियाओं के मुख्य पाँच भेद होते हैं -

1. निश्चयार्थक
2. संभावनार्थ
3. संदेहार्थ
4. आज्ञार्थ
5. संकेतार्थ

इनका विस्तृत अध्ययन निम्नलिखित हैं -

11.2.3.1 निश्चयार्थ :

क्रिया के जिस रूप से किसी बात का निश्चय सूचित होता है उसे निश्चयार्थ कहते हैं ।

उदा : 1) लड़का पुस्तकालय जाता है ।

2) लड़का पुस्तकालय नहीं जाता ।

3) क्या लड़का पुस्तकालय जाना चाहता है ?

इन वाक्यों में 'जाता है'; 'नहीं जाता'; और 'जाना चाहता है' निश्चयार्थक क्रियाएँ हैं ।

कथन, वर्णन, प्रश्न, निषेध आदि निश्चय के अन्तर्गत आते हैं ।

हिंदी में निश्चयार्थक क्रिया का कोई विशेष रूप नहीं है । जब क्रिया किसी विशेष अर्थ में नहीं आती, तब उसे, सुभीते के लिये, निश्चयार्थ में मान लेते हैं।

उदा - 1. लड़का आता है ।

2. नौकर चिट्ठी नहीं लाया ।

3. हम किताब पढ़ते रहेंगे ।

4. क्या आदमी न जायगा ।

5. हवा चलती है ।

6. चिट्ठी भेजी जाती है ।

7. गाड़ी आ रही है ।

8. नौकर चिट्ठी लाया था ।

9. सेना लड़ाई पर भेजी गई थी ।

10. नौकर जायगा ।

11. हम कपड़े पहिनेंगे ।

प्रश्नवाचक वाक्यों में क्रिया के रूप से प्रश्न सूचित नहीं होता, इसलिये प्रश्न को क्रिया का अलग 'अर्थ' नहीं मानते । यद्यपि प्रश्न पूछने में वक्ता के मन में संदेह का आभास रहता है, तथापि प्रश्न का उत्तर सदैव संदिग्ध नहीं होता । जैसे, 'क्या लड़का आया है ?'

(इस प्रश्न का उत्तर निश्चयपूर्वक दिया जा सकता है - जैसे -

लड़का नहीं आया ।

लड़का आया है ।

(इसके सिवा प्रश्न स्वयं कई अर्थों में किया जा सकता है ।) जैसे

क्या लड़का आया है ? (निश्चय)

लड़का कैसे आवे ? (संभावना)

लड़का आया होगा ! (संदेह)

11.2.3.2 संभावनार्थ :

क्रिया के जिस रूप से अनुभाव, इच्छा, कर्तव्य आदि का बोध हो उसे सम्भावनार्थ कहते हैं । जैसे

1) कदाचित मेले में बहुत भीड़ हो । (अनुमान)

2) परीक्षा में तुम्हें सफलता मिले । (इच्छा)

3) शिक्षक को चाहिए कि वह विद्यार्थियों की सहायता करे । (कर्तव्य)

इन वाक्यों में 'हो'; 'मिले' ; 'चाहिए' संम्भावनार्थ क्रियाएँ हैं ।

जैसा कि ऊपर कहा है कि सम्भावनार्थ से कार्य होने की संभावना का बोध होता है । यह वर्तमान, भविष्यत् या भूत सभी कालों में हो सकती है, इसलिए संभावनार्थ के रूप, लिंग, वचन और पुरुष के अतिरिक्त काल के अनुसार बदलते हैं ।

उदा

मैं करूँ ।	
हम करें ।	(भविष्यत् काल) - लिंगभेद नहीं है ।
वह पूछे	
वह कहता हो ।	
आप जाते हो ।	(वर्तमान काल)
मैं करती होऊँ ।	(पुरुषभेद नहीं है ।)
हम चली हों ।	
वे चले हों ।	(भूतकाल)
तू चला हो ।	(पुरुषभेद नहीं है ।
	(केवल सहायक क्रिया में पुरुषभेद है ।)

संभावनार्थ की पहचान वाक्य से पहले 'सम्भव है कि' लगाकर होती है (तीनों कालों में) कर ले - सम्भव है कि मैं करुँ । सम्भव है कि मैं जाऊँ । सम्भव कि वह गया हो । सम्भाव्य रूप से अनुमति (क्या हम चलें); सम्मति (आप उसे बुला लें ।) आदि बहुत से अर्थ प्राप्त होते हैं ।

कुछ उदाहरण निम्नलिखित हैं -

- शायद वह ऐसा समझता हो ।
- हमें ऐसा नौकर चाहिए जो सब काम करता हो ।
- यदि मैं सोता होऊँ तो मुझे न जगाना ।
- हो न हो । कहीं वह लौट न आए ।
- नौकर से कहो कि चाय लाए ।

11.2.3.3 संदेहार्थ :

क्रिया के जिस रूप से किसी बात का संदेह जाना जाय उसे संदेहार्थ कहते हैं। उदा - विद्यार्थी कालेज पहुँच गया होगा ।

सीता अपनी बहन के यहाँ बैठी होगी ।

लड़का आता होगा ।

नौकर गया होगा ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'गया होगा', 'बैठी होगी', 'आता होगा', 'गया होगा', ये क्रियाएँ संदेहार्थ हैं ।

संदेहार्थ में केवल वर्तमान और भूतकाल के रूप होते हैं । कुछ वैयाकरणों ने इनको भी निश्चयार्थ के अन्तर्गत रखा है । किन्तु संदेहार्थ का मतलब ही है 'अनिश्चय' । भाव या अर्थ की दृष्टि में इनका वर्ग अलग मानना चाहिए ।

उदाहरण -

वर्तमान - वह आता होगा ।

मैं आता होऊँगा ।

भूत - वे आयी होंगी ।

हम आये होंगे ।

ये रूप, वचन, लिंग और पुरुष के अनुरूप बदलते है । निषेध में 'न', 'नहीं' दोनों लग सकते हैं । किन्तु तब ये निश्चयार्थ हो जाते हैं ।

11.2.4.4 आज्ञार्थ :

क्रिया के जिस रूप से किसी आज्ञा, उपदेश निषेध आदि का बोध होता है, उसे आज्ञार्थ कहते हैं ।

उदा - अपना कमरा साफ रखो ।
माता पिता का कहना मानो ।
लड़की गाना गाये ।
वहाँ मत जाना ।
क्या मैं जाऊँ ।

उपर्युक्त वाक्यों में साफ रखो, कहना मानो, गाना गाये, मत जाना, जाऊँ आज्ञार्थ क्रियाएँ हैं ।

एक वचन में धातुरूप प्रयुक्त होता है ।

उदा - तू जा ।, तू खा, तू पी, तू सुन, तू सो, तू देख ।

बहुवचन में धातु के साथ ओ लगता है ।

उदा - तुम जाओ, तुम खाओ, तुम पियो, तुम सोओ, तुम सुनो, तुम देखो ।

आग्रह या निदेश सूचित करने के लिए 'तुम' के साथ संज्ञार्थक क्रिया भी आज्ञार्थ होती है । जैसे, तुम जाना, यह करना, वह खाना, यह न खाना, इधर देखना, आदि ।

आदर दिखाने के लिए धातु के साथ - इए; - इएगा जोडा जाता है,
जैसे - आप जाइए, आप उठिए, खाइएगा, देखिएगा ।

निषेध के लिए सामान्य तथा 'ना' या 'मन' का प्रयोग होता है । आदरार्थ में केव 'न' का प्रयोग होता है ।

दुध न पी / पियो ।
घर मत जा / जाओ ।
वहाँ न जाना / उससे कुछ न लीजिए ।

आज्ञार्थ रूपों में लिंग के कारण विकार नहीं होता । पुरुषों में केवल मध्यम पुरुष होता है । अन्य अर्थों में आज्ञार्थ रूप का प्रयोग देखिए -

सच बोलो ।

किसी को गाली मत दो ।

हे नाथ कृपा करो ।

(सूचना - आज्ञार्थ और संभावनार्थ के रूपों में बहुत कुछ समानता है । संभावनार्थ के कर्तव्य, योग्यता आदि अर्थों में कभी कभी आज्ञा का अर्थ गर्भित रहता है;

लड़का यहाँ बैठे ।

इस वाक्य में क्रिया से आज्ञा और कर्तव्य दोनों अर्थ सूचित होते हैं ।)

11.2.3.5 संकेतार्थ :

क्रिया के जिस रूप से कार्य-कारण का सम्बन्ध रखनेवाली दो क्रियाओं की असिद्धि सूचित हो, उसे संकेतार्थ कहते हैं । जैसे

1) "यदि मुझे आर्थिक सहायता मिलती तो मैं चिकित्सिक बनता ।"

2) यदि उसे ठीक समय पर अस्पताल पहुँचाया गया होता, तो उसके प्राण बच जाते ।

इन वाक्यों मे 1) मिलती, बनता 2) पहुँचाया गया होता, बच जाते । संकेतार्थ क्रियाएँ हैं ।

संकेतार्थ के तीन भेद हैं

अ) सामान्य संकेतार्थ

आ) नेमी संकेतार्थ

इ) पूर्व संकेतार्थ

अ) सामान्य संकेतार्थ : इससे चाह या शर्त (यदि) का बोध होता है और संकेत यह रहता है कि कार्य भूतकाल में होनेवाला था पर न हो सका । इसमें कार्य कारण दोनों दिखाये जाते हैं ।

उदा - हम चाहती तो बंगाल में रहती ।

यदि मैं जाता तो काम बन जाता ।

यदि आप पढ़ते होते तो परीक्षा में कैसे नहीं उतीर्ण होते ।

क्या यदि वह सीखता होता तो हमारे सामने नहीं गाता ।

माँ की इच्छा थी कि छोटा भाई मेरे कहे में रहता होता ।

उपर्युक्त उदाहरणों में आपने देखा कि इसमें वर्तमानकालिक कृदन्त के रूप प्रयुक्त होते हैं, इसमें पुरुषभेद नहीं होता, वचन और लिंगभेद होता है ।
उदा

एकवचन पुल्लिगं - मैं चाहती थी कि तुमसे बोलती होती ।
यदि वे पढ़ते होते तो पास हो जाते ।

यदि हमने इंजीनियरिंग कालेज में पढ़ा होता तो मकान बनवाने में ऐसा कष्ट न होता ।

इसमें मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया दोनों वर्तमानकालिक कृदन्त होता हैं, दोनों में पुरुष-भेद नहीं होता, वचन और लिंगभेद होते है ।

एकवचन पुल्लिंग - मैं / तू / वह बोलता होता ।
एकवचन स्त्रीलिंग - मैं / तू / वह बोलती होती ।
बहुवचन पुल्लिंग - हम / तम / बोलते होते ।
बहुवचन स्त्रीलिंग - हम / तुम / वे बोलती होती ।
निषेध के लिए 'न' का प्रयोग

इ) पूर्ण संकेत : इसमें इच्छा या शर्त के भूतकाल में पूर्ण होने की बात तो होती है, किन्तु आदत या नियमितता का प्रश्न नहीं उठता । उदा -

यदि हम गये होते तो भेट हो गयी होती ।
कितना अच्छा होता कि मैंने तुम्हें बुला लिया होता ।

इसमें मुख्य क्रिया भूतकालिक कृदन्त और सहायक क्रिया वर्तमानकालिक कृदन्त होती है । दोनों में पुरुष भेद नहीं होता, वचन और लिंगभेद होता है ।

एकवचन पुल्लिंग	-	मैं / तू / वह बोला होता ।
एकवचन स्त्री	-	मैं / तू / वह बोली होती ।
बहुवचन पुल्लिंग	-	हम / तुम / वे बोले होते ।
बहुवचन स्त्रीलिंग	-	हम / तुम / वे बोली होती ।
अपूर्ण संकेत	-	वह / तू / मैं जा रहा होता ।
		वे / तुम / हम जा रही होती ।
प्रश्न	-	वहाँ कौन गया होता ?
		क्या वह बोली होती ?
		हम कितने बड़े होते ?

निषेध के लिए 'न' का प्रयोग

जैसे, तू / वह / मैं न गया होता ।

मैं न बोली होती तो वह न गयी होती ।

(सूचना - संकेतार्थ वाक्यों में समुच्चय बोधक अव्यय बहुधा आते हैं ।)

सब अर्थों के अनुसार काल के जो भेद होते हैं, उनकी संख्या, नाम और उदाहरण निम्नलिखित हैं ।

निश्चयार्थ

1. सामान्य वर्तमान - वह चलता है ।
2. पूर्ण वर्तमान - वह चला है ।
3. सामान्य भूत - वह चला ।
4. अपूर्ण भूत - वह चलता था ।
5. पूर्ण भूत - वह चला था ।
6. सामान्य भविष्यत् - वह चलेगा ।

संभावनार्थ

7. संभाव्य वर्तमान - वह चलता हो ।
8. संभाव्य भूत - वह चला हो ।
9. संभाव्य भविष्यत् - वह चलें ।

संदेहार्थ

10. संदिग्ध वर्तमान - वह चलता होगा ।
11. संदिग्ध भूत - वह चला होगा ।

आज्ञार्थ

12. प्रत्यक्ष विधि - तू चल ।
13. परोक्ष विधि - तू चलना ।

संकेतार्थ

14. सामान्य संकेतार्थ - वह चलता ।
15. अपूर्ण संकेतार्थ - वह चलता होता ।
16. पूर्ण संकेतार्थ - वह चला होता ।

(सूचना - उपर्युक्त उदाहरणों से जान पडेगा कि हिंदी में कालों की संख्या कम से कम सोलह है । भिन्न - भिन्न उदाहरणों से जान पड़ेगा कि हिंदी में कालों की संख्या कम से कम सोलह है । भिन्न - भिन्न व्याकरणों में यह संख्या भिन्न भिन्न पाई जाती है । इसका कारण यह है कि कोई कुछ कालों को स्वीकृत नहीं करते, अथवा उन्हें भ्रमवश छोड़ जाते हैं ।)

11.3 कृदंत

11.3.1 परिभाषा :

क्रिया से बने हुए वे शब्द, और दूसरे शब्दों की भाँति वाक्य में प्रयुक्त होते हैं कृदन्त कहलाते हैं - जैसे

उसे सोना भी नसीब नहीं ।

वह सोकर उठा ।

सोये हुए बालक को मत जगाओ ।

तुम सोते समय खर्राटे क्यों लेते हो ।

उपर्युक्त वाक्यों में ' समना ', ' सोकर ', ' सोये हुए ' , और ' सोते ' शब्द कृदन्त होते हैं, जो ' सो ' धातु में क्रमश - सो + ना; सो + कर, सो + ये ; सो + ते प्रत्यय के जुडने से बने हैं ।

इसी प्रकार निम्नलिखित वाक्यों को देखिए -

वह दौडना चाहता था ।

वह दौडता हुआ आया ।

वह दौडनेवाला था ।

वह दौडा ।

वह दौड़कर पहूँचा ।

वह दौड़ते हुए आया ।

इनमें दौड़ना, दौड़ता, दौडनेवाला, दौड़ा, दौड़कर, दौड़ते शब्द कृदन्त हैं ।

11.3.2 कृदंत के प्रकार :

क्रियार्थक संज्ञा के सिवा हिंदी में जो और कृदंत हैं वे रूपांतर के आधार पर दो प्रकार के होते हैं - 1) विकारी, 2) अविकारी । फिर इनमें से प्रत्येक के अर्थ के अनुसार कई भेद होते हैं ।

11.3.2.1 विकारी कृदंत :

1) क्रियार्थक संज्ञा
2) वर्तमानकालिक कृदंत
3) भूतकालिक कृदंत
4) कर्तृवाचक कृदंत

11.3.2.2 अविकारी कृदंत :

1) अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत
2) पूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत
3) तात्कालिक कृदंत
4) पूर्वकालिक कृदंत

11.3.2.1 विकारी संज्ञा

11.3.2.1.1 क्रियार्थक संज्ञा :

धातु में 'ना' प्रत्यय जोडने से जो संज्ञा बनती है, उसे क्रियार्थक संज्ञा कहते हैं।

उदा : चलना ही ज़िन्दगी है ।
आना - जाना तो लगा ही रहता है ।
वहाँ पहुँचना मेरे लिए बहुत ज़रुरी है ।
सोने से जागना भला
यह कार्य करना कोई खेल नहीं ।
यहाँ से भागना अच्छा है ।

इन वाक्यों में चल + ना, आ + ना, जा + ना, पहुँच + ना, जाग + ना, कर + ना, भाग + ना आदि क्रियार्थक संज्ञाएँ हैं ।

इन वाक्यों में यह है तो क्रिया किंतु संज्ञा के अर्थ में भी प्रयुक्त हैं, और कभी कभी विशेषण के रूप में भी प्रयुक्त होती है । अतः हम कह सकते हैं कि क्रियार्थक संज्ञा का प्रयोग संज्ञा और विशेषण दोनों रूपों में होता है ।

संज्ञा के रूप में - संज्ञा के रूप में प्रयुक्त होने पर क्रियार्थक संज्ञा पुल्लिंग एकवचन में होती है ।

उदा : हँसना मना है ।

दौडना अच्छा है ।

मिलना मुश्किल है ।

तैरना स्वास्थ्यवर्धक होता है ।

कारक विभक्ति के साथ प्रयोग करने के लिए अन्तिम 'ना' को 'मे' कर दिया जाता है । जैसे -

वह जाने का नहीं ।

गाड़ी जाने को है ।

वहा पहुँचने में मुझे अधिक समय नहीं लगेगा ।

सोए से जागना भला ।

पत्र पढ़ने से पूरी जानकारी मिली ।

लिखने से काम चलेगा ।

पछताने से क्या होवत है ।

लिखने के लिए कलम चाहिए ।

विशेषण रूप में - अकर्मक क्रिया से बननेवाली क्रियार्थक संज्ञा का रूप पुरष के लिंग और वचन के अनुसार होता है -

जैसे - पूजा होनी है ।

खेल होने है ।

पुस्तकें पढ़नी है ।

बात करनी है ।

काम होना है ।

संयुक्त क्रियाओं में 'चाहना', 'होना', 'पड़ना', 'चाहिए' से पहले इसका प्रयोग होता है ।

जैसे,

लाना चाहता हूँ ।

करना पड़ता है ।

लिखना होता है ।

देखना चाहिए ।

11.3.2.1.2 वर्तमानकालिक कृदन्त :

इस कृदंत का उपयोग विशेषण या संज्ञा के समान होता है । जो कृदंत धातु में 'ता' (पु. एकवचन); ते (पु. बहुवचन); ती (स्त्रीलिंग एकवचन); तीं (स्त्रीलिंग बहुवचन) जुडने से बनते हैं ।

उदा - बहता जल स्वच्छ होता है ।

खेलता बच्चा किसे अच्छा नहीं लगता ।

ढलती रही उम्र में सब दगा दे गये ।

गिर रहा मकान कहाँ तक बचाया जा सकता है ।

टूटते हुए अरमान फिर बन न सके ।

वर्तमानकालिक कृदंत विशेषण अपने विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार बदलते हैं ।

इनके साथ हुआ, हुए, हुई, हुई भी जुड सकते हैं । जैसे - बहता हुआ, चलती हुई, गिरते हुए आदि ।

संज्ञा के रूप में भी वर्तमानकालिक कृदन्त का प्रयोग होता है - जैसे -

डूबते को तिनके का सहारा ।

मरता क्य न करता ।

वह रोतों को हँसाना है ।

जाते समय, लौटते वक्त, मरती बेला; जीते जी, फिरती बार, आदि उदाहरणों में वर्तमानकालिक कृदंत का प्रयोग विशेषण के समान हुआ है ।

'आ' कार के स्थान में 'ए' होने का कारण यह है कि विशेषण के विशेष्य में विभक्ति का प्रयोग ।

उपर्युक्त उदाहरणों में

जाते = जाने के; लौटते = लौटने के,

भरती = भरती के; किरती फिरने के ।

जाते, लौटते, भरती, फिरती में संबंध है और संबधकारक विशेषण का एक रूपांतर ही है ।

कभी-कभी वर्तमानकालिक कृदंत विशेषण-विशेष्यनिष्ठ होने पर भी क्रिया की विशेषता बतलाता है ।

उदा - हिरन चौक्डी भरता हुआ भागा ।
हाथी झूमता हुआ चलता है ।
लड़की अटकती हुई बोलती है ।
इस अर्थ में वर्तमानकालिक कृदंत की द्विरुक्ति भी होती है ।

उदा - यात्री अनेक देशों में घूमता घूमता लौटा ।
स्त्री रसोई करते-करते थक गई ।
जवान मरते-मरते बचा ।
बच्ची रोती-रोती हँस पडी ।
लड़का गिरते-गिरते बचा ।

11.3.2.1.3 भूतकालिक कृदंत :

धातु में 'आ' या कभी-कभी 'या' जोड़ने से जो विशेषण बनता है, उसे भूतकालिक कृदन्त विशेषण कहते हैं । इसके साथ भी वर्तमानकालिक कृदन्त विशेषण की भाँति 'हुआ' शब्द जुड़ जाता है ।

उदा - लिखा पत्र फिर से पढ़ो ।
गया धन वापस नहीं आता ।
दिया हुआ कपड़ा मत लेना ।
बची हुई मिठाई खराब हो गई ।

भूतकालिक कृदन्त धातु में 'आ' (पु. एकवचन); - 'ई' (स्त्री एकवचन); - ए (पु. बहुवचन); ई (स्त्री बहुवचन) जुड़कर बनते है । जैसे उपर्युक्त वाक्यों में - लिखा, गया, दिया हुआ, बची हुई आदि ।

भूतकालिक कृदंत विधेयविशेषण होकर भी आता है ; जैसे -
वह मन में फूला नहीं समाता ।
एक पलंग बिछा हुआ था ।
आप तो मुझमे भी गए बीते हैं ।
इसका सबसे ऊँचा भाग बर्फ से ढ़का रहता है ।
चोर घबराया हुआ भागा ।
मैंने पेड पर कुछ फल लगे हुए देखे ।

उपर्युक्त वाक्यों में फूला, बिछा, बीते, ढ़का, घबराया हुआ, लगे हुए आदि कृदंत विधेय विशेषण हैं ।

कभी - कभी सकर्मक भूतकालिक कृदंत का उपयोग कर्तृवाचक होता है, तब उसका विशेष्य कर्म नहीं, किंतु कर्ता अथवा दूसरा शब्द होता है । कर्म विशेषण के पूर्व आकर विशेषण का अर्थ पूर्ण करता है - उदा -

काम सीखा हुआ नौकर ।
इनाम पाया हुआ लड़का ।
पर कटा पक्षी ।
नीचे नाम दी हुई पुस्तक ।
किया हुआ काम ।
खरीदी हुई पुस्तक ।
दिया गया पुरस्कार ।

सकर्मक कृदन्त के साथ 'हुआ' के स्थान पर कभी-कभी जाना क्रिया का भूतकालिक कृदन्त 'गया' जोडते हैं ।

भूतकालिक कृदंत बहुधा अपनी सबंधी संज्ञा के विविध संबंध कारक के साथ आता है,

जैसे - मेरी लिखी पुस्तकें ।
कपास का बना कपड़ा ।
घर का सिला कुरता ।
भगवान का दिया हुआ ।

11.3.2.1.4 कर्तृवाचक कृदंत :

क्रियार्थक संज्ञा के विकृत रूप में 'वाला' प्रत्यय जोडने से बनती है, उसे कर्तृवाचक कृदंत कहते है । अर्थात जिससे कर्ता (काम करनेवाले) का अर्थ प्राप्त होता है । क्रियार्थक संज्ञा के 'ने' रूप के साथ 'वाला' प्रत्यय जोडकर इसकी रचना की जाती है ।

जैसे - करनेवाला, देनेवाला, पानेवाल, रोनेवाला, खेलनेवाला आदि ।

उदा - काम करनेवाला कहाँ है ?

बैठनेवाला सदा हरता है ।

देनेवाले के हाथ हजार ।

खेलनेवाला खेल गया ।

रोनेवाला रोता रहा ।

पानेवाला पा गया ।

कर्तृवाचक संज्ञा के अन्य आकारांत संज्ञाओं के अनुसार ही लिंग, वचन और कारक के रूप आवश्यकतानुसार बदलते हैं ।

उदा - दौडनेवाला चला गया ।

भागनेवालों को पकडो ।

गानेवाली आ रही है ।

पानेवाले का पता लिखे ।

इसका प्रयोग विशेषण के रूप में ही हो सकता है -

जैसे -

चोरी करनेवाला आदमी पकड़ा गया ।

पढ़नेवाले लड़कों का ध्यान रखा ।

खानेवाला सोड़ा लाओ ।

और कृदंतो के समान सकर्मक क्रिया से बना हुआ यह कृदंत भी कर्म के साथ आता है और यदि वह अपूर्ण क्रिया से बना हो तो इसके साथ इसकी पूर्ति आती है -

जैसे,

घडी बनानेवाला, झूठ को सच बतानेवाला; बड़ा होनेवाला । आदि ।

11.3.2.2 अविकारी कृदंत :

11.3.2.2.1 अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत :

यह कृदंत सदा अविकारी (एकारांत) रूप में रहता है और इसका प्रयोग क्रियाविशेषण के समान होता है ।

अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदन्त अव्यय का रूप तात्कालिक कृदन्त अव्यय के समान होता है, परन्तु इसमें 'ही' नहीं जोडा जाता । इससे मुख्य क्रिया के साथ होनेवाले कार्य की अपूर्णता सिद्ध होती है ।

जैसे -

मुझे पुस्तक पढ़ते दो दिन हो गये ।
खिड़की से झाँकते डर लगाता है ।
आपको यह काम करते आनन्द होगा ।
मुझे इस गाँव में रहते अच्छा लगता है ।
सारी रात तड़फ़ते बीती ।
यह कहते मुझे बड़ा हर्ष होता है ।

अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत का उपयोग बहुधा तब होता है, जब कृदंत और मुख्य क्रिया के उद्देश्य भिन्न-भिन्न होते हैं और कृदन्त का उद्देश्य कभी-कभी लुप्त रहता है ।

उदा -

दिन रहते यह काम हो जायगा ।
मेरे रहते कोई कुछ नहीं कर सकता ।
वहाँ से लौटते रात हो जायेगी ।
बात कहते दिन जाते हैं ।
दिन ढलते सपना साकार हुआ ।

जब वाक्य में कर्ता और कर्म अपनी विभक्ति के साथ आते हैं, तब उनका वर्तमानकालिक कृदंत उनके पीछे अधिकारी रूप में आता है और उसका उपयोग बहुधा क्रियाविशेषण के समान होता है -

उदा -

उसने चलते हुए मुझसे यह कहा था ।
मैंने उन स्त्रीयों को लौटते हुए देखा ।
मैं नौकर को कुछ बड़ बड़ाते हुए सुन रहा था।

अपूर्ण क्रियाद्योतक की बहुधा द्विरक्ति होती है, और उससे नित्यता का बोध होता है ।

उदा -

बात करते-करते उसकी बोली बंद हो गई ।

मैं हसते - हसते उसके पास गया ।

वह मरते - मरते बचा ।

उसने हँसते - हँसते मृत्यु को गले से लगाया ।

विरोध सूचित करने के लिए अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत के पश्चात् भी ' अव्यय का योग किया जाता है । उदा -

मंगलसाधन करते हुए भी जो विपत्ति आन पडे तो संतोष करना चाहिए।

वह धर्म करते हुए भी दैवयोग से धनहीन हो गया ।

नौकर मरते मरते भी सच न बोला ।

अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत का कर्ता कभी - कभी कर्ता कारक में, कभी स्वतंत्र होकर, कभी संप्रदान कारक में, और कभी संबंधकारक में आता है । उदा-

मुझे यह कहते आनंद होता है ।

दिन रहते यह काम हो जायगा ।

आपके होते कोई न आयेगा ।

उसने चलते हुए यह कहा ।

पुनरुक्त कृदंत अपूर्ण क्रियाद्योतक का कर्ता कभी - कभी लुप्त रहता है, तब यह कृदंत स्वतंत्र दशा में आता है । उदा -

होते होते सबने अपने अपने पत्ते खोले ।

चलते चलते उन्हें एक गाँव मिला ।

देखते देखते एक वर्ष का हो गया ।

11.3.2.2.2 पूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत :

पूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत अव्यय भूतकालिक कृदन्त विशेषण में अन्तिम 'आ' को 'ए' बदलने से बनता है । इसमें मुख्य क्रिया के साथ होनेवाले व्यापार की पूर्णता सिद्ध होती है - उदा -

उसे अमेरिका गये दो वर्ष हो गये ।

शाम ढ़ले सब तैयार हो गये ।

इस घटना को घटे कई महीने बीत गये ।

बीमार 'हुए' तुम्हें कितने दिन हो गए ?

यह कृदंत भी सदा अविकारी (एकारांत) रूप में रहता है और क्रिया विशेषण के समान उपयोग में आता है ।

1) इस कृदंत का उपयोग भी बहुधा तभी होता है, जब इसका कर्ता और मुख्य क्रिया का कर्ता भिन्न-भिन्न होते हैं -

पहर दिन चढ़े हम लोग बाहर निकले ।

कितने दिन बीते राजा फिर बन को गए ।

सकर्मक पूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत से क्रिया और उद्देश्य की दशा सूचित होती है । उदा -

एक कुत्ता मुंह में रोटी का टुकडा दबाए जा रहा था ।

वह लड़की छाता लिए जा रही है ।

यह कौन महाभयंकर भेष, अंग में भभूत पोते, एडी तक जटा लटकाए, त्रिशूल घुमाता चला आता है ?

यह एक नौकर रखे हैं ।

साँप मुंह में मेढ़क दबाए था ।

नित्यता वा आतिशयता के अर्थ में इस कृदंत की द्विरुक्ति होती है । उदा-

वह बुलाए - बुलाए नहीं आता ।

लड़की बैठे - बैठे उकता गयी ।

बैठे - बिठाए यह आफत्त कहाँ से आयी ?

सिर पर बोझ लादे - लादे वह बहुत दूर चला गया ।

अपूर्ण और पूर्ण क्रियायोतक कृदंत बहुधा कर्ता से संबंध रखते हैं, पर कभी-कभी उनका संबंध कर्म से भी रहता है और यह बात उनके अर्थ और स्थानक्रम से सूचित होती है ।

उदा - मैंने लड़के को खेलते हुए देखा ।

चोर को चोरी करते हुए पकड़ा गया ।

इन वाक्यों में कृदंत का संबंध कर्म से है ।

उसने चलते हुए नौकर को बुलाया ।

मैंने सिर झुकाये हुए राजा को प्रणाम किया ।

इनमें कृदंतों का संबंध कर्ता से है ।

पूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत का कर्ता, अपूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत के कर्ता के समान, अर्थ के अनुसार अलग-अलग कारकों में आता है ।

उदा - इनके मरे न रोइए ।

मुझे घर छोडे युग बीत गया ।

दस बजे गाड़ी आई ।

अपूर्ण और पूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत बहुधा कर्मवाच्य में नहीं आते । यदि आवश्यकता हो तो कर्मवाच्य का अर्थ कर्तृवाच्य से लिया जाता है ।

उदा - वह बुलाए बिना यहाँ न आएगा ।

गाते गाते वह चुके नहीं ।

11.3.2.2.3 तात्कालिक कृदंत :

वर्तमानकालिक कृदन्त विशेषण के अन्तिम 'ता' का 'ते' करके उसके आगे 'ही' जोडने से जो अव्यय बनता है, उसे तात्कालिक कृदन्त अव्यय कहते हैं। इसका प्रयोग मुख्य क्रिया के साथ होनेवाले कार्य की समाप्ति के अर्थ में, क्रिया विशेषण के समान होता है ।

उदा - सिर मुडाते ही ओले पडे ।

बच्चा उठते ही रोने लगा ।

शिक्षक के आते ही कक्षा शांत हुई ।

पत्र पाते ही चल पड़ना ।

सूरज निकलते ही वे लोग भागे ।

इतना सुनते ही वह आग बबूल हो गया ।

इस कृदंत की पुनरुक्ति भी होती है और उससे काल की अवस्थिति का बोध होता है ।

वह मूर्ति देखते ही देखते लोप हो गई ।

आपको लिखते ही लिखते कई घंटे बीत गए ।

इस कृदंत का कर्ता, अर्थ के अनुसार कभी - कभी मुक्य क्रिया का कर्ता और कभी-कभी स्वतंत्र होता है ।

उदा - उसने आते ही उपद्रव मचाचा ।

उसेक आते ही उपद्रव मच गया ।

11.3.2.2.4 पूर्वकालिक कृदंत :

धातु के अंत में ' कर ' अथवा ' के ' जोडने से जो अव्यय बनता है उसे पूर्वकालिक कृदंत अव्यय कहते हैं । इनका प्रयोग कृदंत क्रिया के पहले होनेवाले कार्य की समाप्ति के अर्थ में, क्रिया-विशेषण के समान होता है ।

उदा - छाया देखकर हम लोगों ने वहाँ विश्राम किया ।

वे दरवाजे पर ठिठककर कुछ क्षण देखते रहे ।

उँगली पकड के पहुँचा पकडना अच्छा नहीं ।

उसे समझा-बुझा के शांत करो ।

कभी-कभी पूर्वकालिक कृदंत कर्ताकारक को छोड अन्य कारकों से संबंध रखता है ।

उदा - आगे चलकर उनको एक आदमी मिला ।

भाई को देखकर उसका मनशांत हुआ ।

पैसा देखकर उसकी आँखें फैल गईं ।

कभी-कभी पूर्वकालिक कृदंत के साथ स्वतंत्र कर्ता आता है, जिसका मुख्य क्रिया से कोई संबंध नहीं रहता ।

उदा - चार बजकर दस मिनट हुए ।

खर्च जाकर सौ रूपये की बचत हुई ।

हानि होकर भी हमारी दुर्दशा नहीं होती ।

आज अर्जी पेश होकर यह हुक्म हुआ ।

कभी - कभी पूर्वोक्त क्रिया पूर्वकालिक कृदंत में दुहराई जाती है ।

उदा - वह उठा और उठकर बाहर आया ।

अर्क बटकर बर्तन में जमा होता है और जमा होकर जम जाता है ।

वह रोया और रोकर शांत हुआ ।

बढ़ना, करना, हटना और होना क्रियाओं के पूर्वकालिक कृदंत कुछ विशेष अर्थों में भी आते हैं ।

उदा - चित्र से बढ़कर चितेरे की बड़ाई कीजिए ।
किला सड़क से हटकर है ।
वे शास्त्री करके प्रसिद्ध हैं ।
तुम ब्राह्मण होकर संस्कृत नहीं जानते ।
वे एक बार जंगल में होकर किसी गाँव गये थे ।

'लेकर' - यह पूर्वकालिक कृदंत काल, संख्या, अथवा स्थान का आरंभ सूचित करता है ।

उदा - सबेरे से लेकर शाम तक ।
पाँच से लेकर पचास तक ।
हिमालय से लेकर रामेश्वरम तक ।
कच्छ से कांधार तक ।
राजा से लेकर रंक तक ।
नख से शिख तक ।
इन सब अर्थों में कृदंत का प्रयोग स्वतंत्र है ।

11.4 तद्धित - प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं । जो प्रत्यय क्रिया की धातु के साथ जुडते हैं उन्हें कृत् प्रत्यय कहते हैं और उनसे बने यौगिक शब्दों को, कृदन्त शब्द कहते हैं ।

जो प्रत्यय क्रिया से भिन्न शब्द अर्थात संज्ञा, विशेषण आदि के अन्त में लगते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं और उनसे बने यौगिक शब्दों को तद्धितांत शब्द कहते हैं ।

11.4.1 संस्कृत तद्धित : भाववाचक संज्ञा बनानेवाले तद्धित प्रत्यय : प्रत्य

अ -

कुशल = कौशल, युवन् = यौन, शिशु = शैशव

इमा -

गुरु = गरिमा; महा = महिमा; रक्त = रक्तिमा

ता -

आवश्यक = आवश्यकात ; मधुर = मधुरता, मूर्ख = मूर्खता

त्व -

गुरु = गुरुत्व; पुरुष = पुरुषत्व, बन्धु = बन्धुत्व

य -

पंडित = पांडित्य, धीर = धैर्य, स्वस्थ = स्वास्थ्य

संज्ञा बनानेवाले तद्धित प्रत्यय : (इनमें प्रायः शब्द विशेषण का काम भी देते हैं।)

दंत = दंती, शास्त्र = शास्त्री, सुख = सुखी,

बाल = बाला, प्रिय = प्रिया, सुशील = सुशीला,

किशोर = किशोरी, पुत्र = पुत्री, ब्राह्मण = ब्राह्मणी,

भव = भवानी, इन्द्र = इन्द्राणी, रुद्र = रुद्राणी,

इक -

धर्म = धर्मिक, दिन = दैनिक, पुराण = पौराणिक

क्रियाविशेषण बनानेवाले तद्धित प्रत्यय :

तः - प्रथम = प्रथमतः, विशेष = विशेषत, स्व = स्वतः ।

था - अन्य = अन्यथा, सर्व = सर्वथा, तत् = तथा ।

पूर्वक = दयापूर्वक, दृढ़तापूर्वक, न्यायपूर्वक, विधिपूर्वक ।

11.4.2 हिंदी तद्धित :

आ - चूरा, झोंका, बोझा, खटका, छड़का ।

आई - चिकनाई, ढिठाई, ठिलाई, भलाई ।

आन - उँचान, चौड़ान, निचान।

आपा - बुढ़ापा,

आस - खटास, मिठास

आहट - कड़ुआहट, चिकनाहट, गड़बड़ाहट

ई - चोरी, किसानी, खेती, महाजनी

पन - एकालापन, गँवारपन, बालापन, लड़कपन

इया - अँविया, खटिया, गठरिया, डिबिया, चुरिया ।

ई घाटी, टोकरी, पहाड़ी, डोरी, नाली, हथौड़ी ।

(ईया तथा ई - लघुतावाची संज्ञा बनानेवाले तद्धित प्रत्यय है ।)

(सूचना-तद्धित प्रत्ययों की विस्तार से चर्चा ईकाई 10.3.1.2 तथा 10.3.2.2 में की गई है ।)

11.5 उपसंहार :

प्रस्तुत इकाई में अर्थ, कृदंत तथा तद्धित पर विशेष जानकारी प्राप्त की है। हमने देखा कि क्रिया के अनेक अर्थ या भाव हो सकते हैं । रूप - रचना की दृष्टि से हिन्दी में तीन भाव - निश्चयार्थ, संभावनार्थ और आज्ञार्थ माने जाते हैं। इनके अतिरिक्त संदिग्धार्थ, और संकेतार्थ भी विचारणीय है । प्रस्तुत इकाई में अर्थों के इन प्रकारों पर विशेष प्रकाश डाला गया है ।

धातु में प्रत्यय लगाकर जो रूप बनते हैं उन्हें कृदंत कहते हैं - उदा - दौड से दौड़ता, दौड़ा, दौड़ाना, दौड़नेवाला, दौडते हुए, दौड़कर । इनका प्रयोग संज्ञा, विशेषण और क्रिया की तरह होता है । क्रिया की रचना में आठ प्रकार के कृदन्तों का प्रयोग होता - 1) क्रियार्थक संज्ञा 2) वर्तमानकालिक कृदंत 3) भूतकालिक कृदंत 4) कर्तृवाचक कृदंत - (ये चारों विकारी कृदंत है ।) 5) अपूर्ण क्रियद्योतक कृदंत 6) पूर्ण क्रियाद्योतक कृदंत 7) तात्कालिक कृदंत 8) पूर्वकालिक कृदंत (और ये चारों अविकारी कृदंत हैं । प्रस्तुत इकाई में इनका विस्तार से अध्ययन किया गया है ।

जो प्रत्यय क्रिया से भिन्न शब्द अर्थात संज्ञा और विशेषण आदि के अन्त में लगते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं और उनसे बने यौगिक शब्दों को तद्धितांत शब्द कहते हैं ।

प्रस्तुत इकाई में उपर्युक्त तीनों बिंदुओं पर विशेष विचार किया गया है ।

11.6 बोध प्रश्न :

1) क्रिया के मुख्य अर्थ कितने है ? सोदाहरण समझाइए ।

(देखिए - 11.4.1)

2) संभावनार्थ और संदेहार्थ का अन्तर स्पष्ट कीजिए ।

(देखिए 11.4.2 तथा 11.4.3)

3) नीचे लिखें वाक्यों में क्रियाओं का अर्थ बताइए

क) यदि उसे ठीक ढ़ंग से पढ़ाया गया होता तो वह उत्तीर्ण हो जाता ।

ख) अपने वचन का पालन करो ।

ग) कदाचित आज वर्षा हो ।

घ) मुझे कुछ रूपये दो ।

ङ) ये लोग बनारस पहुँच गये होंगे ।

4) कृदन्त की परिभाषा दीजिए ।

5) विकारी और अविकारी कृदन्त का अन्तर स्पष्ट कीजिए ।

6) विकारी कृदन्तों के भेद बताते हुए प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए ।

7) कृदन्तों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए ।

1) सिर ..... ही आले पडे ।

2) ..... धन वापस नहीं आता ।

3) गाडी छुटने ..... है ।

4) परिश्रम ..... से ही तुम उत्तीर्ण होंगे ।

5) उसकी इच्छा डाक्टर ..... की है ।

6) ..... भूत की लँगोटी भली ।

7) ..... जल स्वच्छ होता है ।

(उत्तर - मुंडाते, गया, को, करने, बनने, भागते, बहता)

11.7 सहायक पुस्तकें ।

1) हिन्दी रूप रचना - आचार्य जयेन्द्र त्रिवेदी

2) हिन्दी व्याकरण - कामताप्रसाद गुरु

3) परिष्कृत हिन्दी - बदरीनाथ कपूर

NOTES

इकाई : 12
क्रियाविशेषण

12.0 उद्देश्य

12.1 प्रस्तावना

12.2 परिभाषा

12.3 क्रियाविशेषण का वर्गीकरण

12.3.1 प्रयोग के आधार पर

12.3.2 रूप के आधार पर

12.3.3 अर्थ के आधार पर

12.4 यौगिक क्रिया विशेषण के रूप

12.5 क्रियाविशेषण के कुछ उदाहरण

12.6 सारांश

12.7 बोधप्रश्न

12.8 सहायक ग्रथं

12.0 उद्देश्य :

प्रस्तुत इकाई में क्रिया-विशेषण का अध्ययन करने जा रहे हैं । इस इकाई के अध्ययन से आप क्रिया विशेषण की

- परिभाषा जान पायेंगे ।
- क्रियाविशेषणों का प्रयोग कब होता है इसे समझ पायेंगे ।
- विभिन प्रकारों के अध्ययन से आप क्रियाविशेषणों के महत्व एवं प्रयोग के औचित्य को समझ सकेंगे ।

12.1 प्रस्तावना :

शब्द दो प्रकार के होते हैं विकारी और अविकारी । हिन्दी के संपूर्ण शब्द भंडार को प्रमुख रूप से भेदों में वर्गीकृत किया है । विकारी शब्दों को अध्ययन आपने आरंभिक इकाइयों में किया है । इस इकाई में अविकारी अर्थात अव्यय का विचार करते हुए क्रिया विशेषण का विस्तृत अध्ययन करने जा रहे हैं । क्रिया

विशेषण तथा उसके विभिन्न भेदों का अध्ययन के आगे पृष्ठों में किया जा रह है।

12.2 परिभाषा :

जिस (अव्यय : अविकारी शब्द) से क्रिया की कोई विशेषता जानी जार्त है, उसे क्रिया-विशेषण कहते हैं । जैसे -

मैं परसों जाऊँगा ।'

उसे शीघ्र लौटना है ।

लड़का तेज दौड़ा ।

आजकल आप क्या करते हैं ।

लड़का बहुत तेज दौड़ता है ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'परसों', 'शीघ्र', 'तेज', 'आजकल' तथा 'बहुत' शब्द क्रियाविशेषण हैं । क्योंकि ये शब्द क्रमशः 'जाऊँगा', 'लौटना', 'दौडा', 'करते हैं', 'दौड़ता है' क्रियाओं की विशेषता बताते हैं ।

(सूचना : कुछ विद्वान विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्द को भी क्रिया-विशेषण कहते हैं, किन्तु जैसा कि पहले कहा जा चुका है कि विशेषण की विशेषता बताने वाले शब्दों को 'प्रविशेषण' कहते है ।

उदा - 'वह बहुत बुद्धिमान लड़का है ।'

इस वाक्य में 'बुद्धिमान' शब्द 'लडका' संज्ञा की विशेषता बताता है, अतः विशेषण है । 'बहुत' शब्द 'बुद्धिमान' विशेषण की विशेषता बताता है, इसलिए यह 'प्रविशेषण' है ।

कभी-कभी क्रिया की विशेषता बताने वाले दो क्रिया-विशेषण एक साथ आ जाते हैं । वे दोनों संयुक्त क्रिया - विशेषण कहलाते हैं । जैसे -

लडका बहुत तेज दौडा ।

लड़की बड़ा अच्छा गाती है ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'बहुत तेज' और 'बडा अच्छा' संयुक्त क्रिया-विशेषण है, जो क्रमशः 'दौडा' और 'गाती है' क्रियाओं की विशेषता बताते हैं ।

12.3 क्रिया-विशेषण का वर्गीकरण

क्रिया-विशेषणों का वर्गीकरण तीन आधारों पर हो सकता हैं -

क) प्रयोग के आधार पर

ख) रूप के आधार पर

ग) अर्थ के आधार पर

13.1 प्रयोग के आधार पर :

प्रयोग के आधार पर क्रियाविशेषण तीन प्रकार के होते हैं -

I) साधारण

II) संयोजक

III) अनुबद्ध

1) साधारण क्रिया-विशेषण :

जिस क्रिया विशेषण का प्रयोग वाक्य में स्वतन्त्र रूप से होता है, उसे साधारण क्रिया विशेषण कहते हैं । जैसे -

गाडी धीरे चलती है ।

वह अच्छा गाती है ।

अब मैं चला ।

बेटा ! जल्दी आओ ।

वह साँप कहाँ गया ।

इन वाक्यों में क्रमशः 'धीरे', 'अच्छा', 'अब', 'जल्दी' तथा 'कहाँ' शब्दों का स्वतंत्र रूप से प्रयोग हुआ है । जो क्रिया की विशेषता बताते हैं ।

II) संयोजक क्रिया - विशेषण :

जिस क्रिया-विशेषण का सम्बन्ध अन्य उपवाक्य के किसी क्रिया विशेषण से रहता है, उसे संयोजक क्रिया - विशेषण कहते हैं । जैसे -

वह जितना बोलता है, उतना ही करता है ।

जहाँ धर्म है, वहाँ विजय है ।

जब पृथ्वी तपती है, तब वर्षा होती है ।

इधर अध्यापक पढ़ाता रहा उधर वह सोता रहा ।

III) अनुबद्ध क्रिया - विशेषण :

जिन क्रिया विशेषण का प्रयोग वाक्य में सम्मुच्चय बोधक और विस्मयादि बोधक को छोड़ अन्य किसी शब्द-भेद के साथ अवधारण के लिए होता है, उसे अनुबद्ध क्रिया-विशेषण कहते हैं ।

वह गया तो था ।
तुम कल भी नहीं आये थे ।
साँप भी मरा, लाठी भी टूटी ।
मैंने उसे देखा तक नहीं ।
आपके आने भर की देरी है ।
अब मैं भी तुम्हारी सखी का वृतांत पूछता हूँ ।

12.3.2 रूप के आधार पर क्रिया विशेषण :

रूप या रचना के आधार पर क्रिया - विशेषण के तीन प्रकार होते हैं -

I) मूल क्रिया - विशेषण
II) यौगिक क्रिया विशेषण
III) स्थानीय क्रिया - विशेषण

मूल क्रिया विशेषण : जो क्रिया-विशेषण किसी दूसरे शब्द से नहीं बने होते, मूल क्रिया-विशेषण कहलाते हैं जैसे - 'आगे', 'फिर', 'ठीक', 'पास', अचानक, आदि ।

यौगिक क्रिया - विशेषण - जो क्रिया विशेषण दूसरे शब्दों की सहायता से बनते हैं, यौगिक क्रिया विशेषण कहलाते हैं ।

यौगिक क्रिया-विशेषण तीन-प्रकार से बनते हैं ।

अ) शब्द भेदों में प्रत्यय या शब्दांश जोडने से ।
आ) शब्दों की द्विरुक्ति से ।
इ) भिन्न-भिन्न शब्दों के मेल से ।

अ) शब्द भेदों में प्रत्यय या शब्दांश जोड़ने से :

संज्ञा से : जैसे - रात भर, श्रद्धापूर्वक, सबेरे तक, नियम से, प्रेमपूर्वक, क्रमशः आदि

सर्वनाम से : जैसे - यहाँ, वहाँ, अब, जब, जिससे, इसलिए, तिसपर इत्यादि।

सर्वनाम	कालवाचक क्रिया विशेषण	स्थानवाचक क्रिया विशेषण	रीतिवाचक क्रिया विशेषण	परिमाणवाचक क्रिया विशेषण
यह	अब	यहाँ, इधर	ऐसे, यों	इतना
वह	तब	वहाँ, उधर	वैसे,	उतना
जो	जब	जहाँ जिधर	जैसे, ज्यों	जितना
कौन	कब	कहाँ, किधर	कैसे, क्यों	कितना

विशेषण से : जैसे - धीरे, चुपके, भूल से, इतने में, सहज से, पहले, दूसरे, ऐसे, जैसे, तेज अच्छा ठीक, पहले आदि ।

क्रिया से : जैसे-चाहे, खाते, पीते, आते, करते, देखते हुए, मानो, बैठे हुए आदि।

अव्यय से : जैसे - यहाँ तक, कब का, ऊपर को, झट से,

क्रिया विशेषणों के साथ निश्चय जानने के लिए बहुधा 'ई' वा 'ही' लगाते हैं -

जैसे - अभी (अब + ही) कहीं (कहाँ + ही)

तभी (तब + ही) यहीं (यहाँ + ही)

कभी (कब + भी)

आ) शब्दों की द्विरुक्ति से :

क) संज्ञाओं की द्विरुक्ति से : नगर-नगर, हाथों-हाथ, कदम-कदम, पल-पल बीचों-बीच, घर-घर, घडी-घडी आदि।

ख) विशेषणों की द्विरुक्ति से : साफ-सफि, एकाएक, ठीक-ठीक, पहले-पहल

ग) क्रिया-विशेषणों की द्विरुक्ति से : जैसे - धीरे-धीरे, जहाँ-जहाँ, कब-कब, कहाँ-कहाँ, बैठे-बैठे, बकते-बकते, पहले-पहल आदि ।

इ) भिन्न - भिन्न शब्दों के मेल से :

I) दो भिन्न-भिन्न संज्ञाओं के मेल से -

जैसे - रात-दिन, घर-बाहर, सुबह-शाम, आँगन-द्वार, देश-विदेश आदि

II) दो भिन्न-भिन्न क्रिया विशेषणों के मेल से -

जैसे - जब-तब, यहाँ तक, आज कल, ज्यों-त्यों, आस-पास, आमने-सामने, जब-कभी, तले-ऊपर, कल-परसों आदि ।

III) संज्ञा और विशेषण के मेल से :

जैसे - हर-पल, प्रतिदिन, एक साथ, लगातार, जबरदस्ती, हमेशा, एक बार, आदि ।

IV) क्रिया विशेषण और दूसरे शब्दों के मेल से :

जैसे - यथाशक्ति, अनजाने, भरसक, शक्तिभर आदि ।

V) दो समान अथवा असमान क्रिया विशेषण के बीच में 'न' रखने से :

जैसे - कभी न कभी, कहीं न कहीं, कुछ न कुछ, आज न कल

VI) अनुकरणवाचक शब्दों की द्विरुक्ति से :

जैसे - गटगट, तड़ातड, सटासट, धड़ाधड़ आदि ।

VII) पूर्वकालिक कृदन्त (करके) और विशेषण के मेल से :

जैसे - एक-एक करके, विशेष करके, खास करके, मुख्य करके, बहुत करके आदि ।

स्थानीय क्रिया विशेषण : दूसरे शब्द भेद जो बिना किसी रूपान्तर के क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं, स्थानीय क्रिया - विशेषण कहलाते हैं । जैसे-

I) संज्ञा - वह अपना सिर पढ़ेगा ।

तुम मेरी मदद पत्थर करोगे ।

II) सर्वनाम - लीजिए महाराज, मैं यह चला ।

कोतवाल जी तो वे आते हैं ।

हिंसक जीव मुझे क्या मारेंगे ।

तुम्हें यह बात कौन कठिन है ।

III) विशेषण : मनुष्य उदास बैठा है ।
वह अच्छा खेलता है ।
सब लोग सोए पडे थे ।
हमने इतना पुकारा ।
लड़का कैसा कूदा ।

IV) वर्तमानकालिक कृदन्त : सीता रोती हुई जा रही है ।
वह गाता हुआ चला पड़ा ।

V) पूर्वकालिक कृदन्त : तुम दौड़कर चलते हो ।
कौन लेटकर पढ़ता है ।
लड़का उठकर भागा ।

VI) भूतकालिक कृदन्त : लड़का घबराया हुआ पहूँचा ।
राम हाँफता हुआ खड़ा था ।

संस्कृत क्रिया - विशेषण : हिन्दी में कई एक संस्कृत क्रिया विशेषण आते हैं ।

तत्सम : अकस्मात, अन्यत्र, कदाचित, प्राय, बहुधा, पुनः, वृथा, व्यर्थ, वस्तुतः, संप्रति, शनै, सहसा, सर्वत्र, सर्वदा, सर्वथा, साक्षात आदि।

तद्भव : आज (सं - अद्य); कल (सं - कल्प)
परसों (सं - परश्व); आगे (सं - अग्र)
सामने (सं - संमुख); सतत (सं - सततम्) आदि ।

उर्दू क्रिया-विशेषण : हिन्दी में उर्दू क्रिया विशेषण भी आते हैं । ये शब्द तत्सम और तद्भव दोनों प्रकार के होते हैं ।

तत्सम : शायद, अकसर, फौरन, जरुर, बिलकुल, आदि

तद्भव : हमेशा, सही, जलदी, खूब, आखिर आदि ।

12.3.3 अर्थ की दृष्टि से क्रिया - विशेषण के भेद :

अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषणों के निम्नलिखित चार भेद होते हैं -

I) स्थानवाचक
II) कालवाचक
III) रीतिवाचक
IV) परिमाणवाचक

I) स्थानवाचक क्रिया विशेषण : जिस क्रिया-विशेषण से क्रिया की स्थिति या दशा का बोध होता हो, उसे स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं । स्थानवाचक क्रिया विशेषण के दो भेद हैं -

अ) स्थितिवाचक

आ) दिशावाचक

स्थितिवाचक क्रिया विशेषण के कुछ उदाहरण देखिए -

यहाँ अंधेरा है ।

वहाँ भीड़ है ।

हम बाहर जायेंगे ।

अन्दर उमस हो रही है ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'यहाँ', 'वहाँ', 'बाहर', 'अन्दर' ये शब्द क्रियाओं की स्थिति का बोध कराते हैं ।

इसके कुछ अन्य उदाहरण है - जहाँ, कहाँ, तहाँ, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, तले, सामने, साथ, बाहर, भीतर, पास, सर्वत्र, अन्यत्र आदि ।

दिशावाचक क्रिया विशेषण दिशा का बोध कराते हैं - जैसे -

तुम्हें उधर जाना चाहिए ।

दायें मुडिये ।

जिधर से आये हो उधर ही जाइए ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'उधर', 'जिधर', 'दायें' आदि शब्द दिशा का बोध कराते हैं अतः ये दिशावाचक क्रिया विशेषण है ।

इधर, उधर, किधर, जिधर, तिधर, दूर परे, अलग, बाएँ, आरपार, इस तरफ, उस जगह, चारों ओर आदि दिशावाचक के उदाहरण है ।

II) कालवाचक क्रिया विशेषण : जिस क्रिया विशेषण से क्रिया के काल (अर्थात 'कब' का उत्तर) का बोध हो उस एकालवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं । कालवाचक क्रिया विशेषण तीन प्रकार के होते हैं -

अ) समयवाचक

आ) अवधिवाचक

इ) पौन पुन्यवाचक

अ) समयवाचक : मेरा भाई आज बनारस जायेगा ।

गाडी अभी आयेगी ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'आज', 'अभी', ये शब्द क्रियाओं के समय की सूचना देते हैं।

आज, कल; परसों, तरसों, नरसों, अब, जब, कब, तब, अभी, कभी, फिर, तुरंत, सबेरे, पहले, पीछे, प्रथम, निदान, आखिर, इतने में आदि समयवाचक क्रिया विशेषण है ।

आ) अवधिवाचक : हम प्रतिदिन घूमने जाते हैं ।

आजकल आप कहाँ रहते हैं ?

नित्य रामायण का पाठ होता है ।

निरंतर नामस्मरण कीजिए ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'प्रतिदिन', 'आजकल', 'नित्या', 'निरंतर' आदि शब्द क्रियाओं की अवधि का बोध करते है, इसलिए ये अवधिवाचक क्रिया-विशेषण हैं ।

आजकल, नित्य, सदा, सतत, निरंतर, अबतक, कभी-कभी, कभी न कभी, अब भी, लगातार, दिनभर, कब का, इतनी देर आदि अवधिवाचक क्रिया विशेषण हैं ।

इ) पौन पुन्यवाचक : बार-बार वह प्रश्न करता रहा ।

कई बार उसने पुरस्कार पाया ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'बार-बार', 'कई-बार', पौन पुन्यवाचक क्रिया-विशेषण है ।

बारबार, बहुधा, अकसर, हररोज, घडी कई बार, पहले फिर, एक दूसरे तीसरे, हरबार, हरदफे आदि पौन-पुन्यवाचक क्रिया विशेषण है ।

III) रीतिवाचक क्रिया विशेषण - जिस क्रिया विशेषण मे क्रिया की रीति (अर्थात 'कैसे' का उत्तर) का बोध हो, उसे रीतिवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं ।

जैसे - उस दिन मेहमान अचानक पहुँचे ।

सेना पैदल चलती है ।

हम यथाशक्ति प्रयास करेंगे ।

वह सचमुच चला गया ।

उपर्युक्त वाक्यों में 'अचानक', 'पैदल', 'यथाशक्ति' तथा 'सचमुच' क्रियाओं की रीति प्रकट करते हैं, इसलिए ये रितिवाचक क्रिया विशेषण है ।

रीतिवाचक क्रिया विशेषण के निम्नलिखित भेद हैं -

प्रकार - बोधक : गाडी धीरे चलती है ।

सहसा बिजली चमकी ।

प्रधानमंत्री पैदल आये ।

गीताने ध्यानपूर्वक पत्रपढ़ा ।

ऐसे, वैसे, जैसे, कैसे, धीरे, अचानक, सहसा, सहज, यों ही, पैदल, जैसे - तैसे, परस्पर, एकाएक, मन से, ध्यानपूर्वक, यथाशक्ति, हँसकर, मुस्कराकर, फटाफट, झट से, अकस्मात, यों ही, विनयपूर्वक, आदि शब्द प्रकार बोधक रीतिवाचक क्रिया विशेषण हैं ।

निश्चय बोधक : जैसे,

वह अवश्य उत्तीर्ण होगा।

हम सचमुच खाना खा चुके।

बेशक वह अव्वल आयेगा।

दरअसल वह आना चाहता था।

अवश्य, सचमुच, बेशक, दरअसल, निसन्देह, जरुर, वास्तव में आदि शब्द निश्चय बोधक रीतिवाचक क्रिया विशेषण हैं ।

अनिश्चय बोधक : जैसे -

संभवत : वह विदेश जायेगा ।

शायद आज वर्षा हो ।

संभवतः, शायद, कदाचित, शायद ही, बहुत करके, यथासंभव आदि शब्द अनिश्चय-बोधक रीतिवाचक क्रिया-विशेषण हैं ।

कारण बोधक : जैसे -

आपने किसलिए उसे बुलाया ?

मैं बीमार हूँ, इसलिए आपके यहाँ नहीं आ सकूँगा ।

किसलिए, इसलिए, अतः क्यों आदि शब्द कारण-बोधक रीतिवाचक क्रिया विशेषण हैं ।

निषेध-बोधक : जैसे

वह नहीं आयेगा ।

मुझसे पूछे बिना न जाना ।

मत जाओ ।

'नहीं', ' न ' और ' मत ' तीनों निषेध-बोधक रीतिवाचक क्रिया-विशेषण निम्नलिखित स्थितियों में प्रयुक्त होते हैं

अ) सामान्य हेतुहेतुमद्भूत, सामान्य वर्तमान, अपूर्ण वर्तमान और पूर्ण वर्तमान काल में 'नहीं' का प्रयोग होता है । जैसे -

मैं नहीं जाता ।

मैं नहीं जाता हूँ ।

मैं नहीं जा रहा हूँ ।

मैं नहीं गया हूँ ।

आ) दो या अधिक में निषेध बताने के लिए 'न' का प्रयोग होता है । जैसे:

न सीता आई न श्याम ।

यहाँ न न्याय है न विचार ।

हमें न धरती मिली न आसमान ।

इ) विधि क्रिया में 'न' का प्रयोग होता है । जैसे -

ऐसी गलती न कर बैठना ।

यह बात भूल कर भी न करना ।

ई) विधि क्रिया में 'मत' का भी प्रयोग होता है । जैसे

शोर मत मचाओ ।

उधर मत बैठो ।

बात मत करो ।

बहुधा 'न' का प्रयोग साधारण निषेध के अर्थ में और 'नहीं' का प्रयोग निश्चित निषेध के अर्थ में होता है । जैसे -

वह न दौडे ।

तुम मत दौड़ना ।

उ) कभी-कभी 'न' का प्रयोग प्रश्नवाचक क्रिया-विशेषण के रूप में होता है । जैसे-

तुम मेरी बात मानोगे न ?

तुम सुन रहे हो न ?

(निषेध व्यक्त करने के लिए निश्चयार्थ में नहीं, प्रत्यक्ष विधि में 'मत' और परोक्ष विधि में 'न' का प्रयोग होता है ।)

ऊ) अनुकरण बोधक : जैसे -

वह सरसर चला गया ।

लड़के को तड़ातड़ पीटा गया ।

फटाफट काम निपटाओ ।

गटगट, धड़ाधड़, तड़ातड़, फड़ाफड़, पटपट आदि शब्द अनुकरण बोधक रीतिवाचक क्रिया विशेषण है ।

ए) अवधारण-बोधक : जैसे -

वह भी खायेगी ।

तुम वर्ष भर परिश्रम करो ।

तो, ही, भी, भर, तक, मात्र आदि शब्द अवधारण बोधक रीतिवाचक क्रिया-विशेषण हैं ।

परिमाण - बोधक क्रिया - विशेषण :

जिस क्रिया विशेषण से क्रिया के परिमाण (अर्थात् 'कितना' का उत्तर) का बोध हो, उसे परिमाण बोधक क्रिया विशेषण कहते हैं । जैसे

उसने बच्चे को बहुत मारा ।

वह खूब बोलती है ।

स्त्री कुछ लजाती है ।

लोग गाँधी को बिल्कुल भूल गये ।

अति, अत्यन्त, थोडा, कुछ, बहुत, कम, तनिक, अतिशय, इतना, उतना, कितना, जितना, प्रायः, निपट, निरा, केवल, खूब, बिल्कुल आदि शब्द परिमाण - बोधक क्रिया-विशेषण हैं ।

परिमाण बोधक क्रिया-विशेषण के निम्नलिखित भेद हैं -

अधिकता बोधक : बहुत, अति, बड़ा, भारी, बहुतायतसे, बिल्कुल, सर्वथा, खूब, पूर्णतया, निपट, अत्यन्त आतिशय इत्यादि ।

न्यूनताबोधक : कुछ, लगभग, थोडा : दुक, प्रायः जरा, किंचित इत्यादि ।

पर्याप्तिवाचक : केवल, बस, काफी, यथेष्ठ, चाहे, बराबर, कितना, बढ़कर, आदि ।

तुलनावाचक : अधिक, कम, इतना, उतना, जितना, कितना, बढकर, और, आदि ।

श्रेणीवाचक : थोडा-थोडा, क्रम क्रम से, बारी-बारी से, तिल-तिल, एक-एक करके, यथाक्रम आदि ।

प्रश्नवाचक क्रिया-विशेषण : जिस क्रिया विशेषण का प्रयोग प्रश्न करने के लिए होता है, उसे प्रश्न-वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं- जैसे -

तुम कैसे जाओगे ?

वह कहाँ गया है ?

गाड़ी कब आयेगी ?

उसे क्यों भेज दिया ?

जैसे, कहाँ, कब, क्यों, क्या, क्योंकर, किस प्रकार, कहाँ तक आदि शब्द प्रश्न-वाचक क्रिया-विशेषण हैं । ये क्रिया-विशेषण कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक अथवा परिमाण-बोधक होते हैं ।

12.4 यौगिक क्रिया विशेषण दूसरे शब्द में नीचे लिखे शब्द अथवा प्रत्यय जोडने से बनते हैं -

संस्कृत क्रिया विशेषण

पूर्वक	- ध्यानपूर्वक, प्रेमपूर्वक, आदि ।
वश	- विधिवश, भयवश, प्रेमवश ।
इन (आ)	- सुखेन, येन केन प्रकारेण, मनसावाचाकर्मणा ।
या	- कृपया, विशेषतया ।
अनुसार	- रीत्यानुसार, शक्त्यनुसार ।
तः	- स्वभावतः, वस्तुतः, स्वतः ।
दा	- सर्वदा, सदा, यदा, कदा ।
धा	- बहुधा, शतछथा, नवधा ।
शः	- क्रमशः, ऊपरशः ।
त्र	- एकत्र, सर्वत्र, अन्यत्र ।
था	- सर्वथा, अन्यथा ।
वत्	- पूर्ववत्, तद्वत् ।
चित्	- कदाचित्, किंचित, क्वचित् ।
मात्र	- पलमात्र, नाममात्र, लशमात्र ।

हीन्दी क्रिया - विशेषण

ता, तें	- दैड़ता, करता, बोलता, चलते, आते, मारते ।
आ, ए	- बैठा, भागा, लिए, उठाए, बैठे, चढ़े ।
को	- इधर को, दिन को, रात को, अंत को ।
से	- धर्म से, मन से, प्रेम से, इधर से, तब से ।
में	- संक्षेप में, इतने में, अंत में ।
का	- सबेरे का, कब का ।
तक	- आज़ तक, यहाँ तक, रात तक, घर तक ।
कर करके	- दौड़कर, उठाकर, देखकरके, धर्म-करके, भक्तिकरके, क्योंकर
भर	- रात-भर, पल-भर, दिन-भर ।

(सूचना : नीचें लिखे प्रत्ययों और शब्दों से सार्वनामिक क्रिया विशेषण बनते हैं।)

ए	- ऐसे, कैसे, जैसे, वैसे, थोडे । यहाँ, वहाँ, कहाँ, जहाँ, तहाँ ।
धर	- इधर, उधर, जिधर, तिधर ।
यों	- यों, त्यों, ज्यों, क्यों ।
लिये	- इसलिये, जिसलिये, किसलिये ।
ब	- अब, कब, जब, तब ।

उर्दू क्रिया विशेषण

अन	- जबरन, फौरन, मसलन आदि ।

12.5 कुछ क्रिया विशेषणों के विशेष अर्थों और प्रयोगो के उदाहरण नीचे दिए जाते हैं -

अब अभी - यद्यपि इनका अर्थ वर्तमान काल का है, तो भी ये 'तब' और 'तभी' के समान बहुधा भूत आर भविष्यत्कालों में भी आते हैं ।

जैसे - अब एक नई घटना हुई ।

हम अभी जायेंगे ।

अभी पौ भी नहीं फटी थी कि सेनाने नगर घेर लिया ।

तब-फिर - इनका प्रयोग बहुधा भूत और भविष्यत् कालों में होता है । भाषा रचना में ' तब ' की द्विरुक्ति मिटाने के लिए उसके बदले बहुधा ' फिर ' की योजना करते हैं ।

जैसे - तब (मैंने) समझा कि इनके भीतर कोई अभागा बंद है ।

फिर जो कुछ हुआ, सो आप जानते ही हैं ।

(कभी-कभी 'तब' और 'फिर' एक ही अर्थ में आते हैं ।)

जैसे - तब फिर आप क्या करेंगे ।

कहीं - अनिश्चित स्थान के अर्थ के सिवा यह 'अत्यंत' और 'कदाचित' के अर्थ में भी आता है ।

जैसे - पर मुझसे वह कहीं सुखी है ।

सखी ने ब्याह की बात कही हँसी से न कही हो ।

कहीं धूप कहीं छाया ।

कहीं डूबे तिरे हैं ?

केवल - यह अर्थ के अनुसार कभी विशेषण, कभी क्रिया-विशेषण और कभी समुच्चय बोधक होता है -

जैसे - लड़का केवल चिल्लाता है ।

केवल एक तुम्हारी आशा प्राणों को अटकाती है ।

तो - इससे निश्चय और आग्रह सूचित होता है । यह किसी भी शब्दभेद के साथ आ सकता है ।

जैसे : तुम कहाँ गए तो थे ।

किताब तुम्हारे पास तो थी ।

(इसके साथ 'नही' और 'भी' आते हैं, और ये संयुक्त शब्द (नहीं, तो भी) सम्मुच्चय बोधक होते हैं । 'यदि' के साथ दूसरे वाक्य में आकर 'तो' सम्मुच्चय बोधक होता है - यदि तुम न आओ तो रात लंबी लगती है।'

भी : यह शब्द अर्थ में 'ही' के विरुद्ध है और 'तक' के समान अधिकता के अर्थ में आता है । जैसे -

यह भी देखा, वह भी देखा ।

दो वाक्यों या शब्दों के बीच में और रहने पर इससे अवधारण का बोध होता है ।

जैसे - मैंने उसे देखा और बुलाया भी ।

कहीं कहीं 'भी' अवधारण बोधक होता है ?

जैसे - इस काम को कोई भी कर सकता है ।

पत्थर भी कहीं पसीजता है ।

(कहीं कहीं इससे आग्रह का बोध होता है -)

जैसे - उठो भी ।

तुम वहाँ जाओगी भी ।

यहाँ मात्र पाँच-छं शब्दों को उदाहरण स्वरूप दिया गया है । अन्य उदाहरणों के लिए सहायक ग्रंथों को देखे ।

12.6 सारांश :

प्रस्तुत इकाई में क्रिया-विशेषणों का यथासाध्य व्यवस्थित विवेचन करने के लिये हमने उनका वर्गीकरण अर्थ, प्रयोग, रचना और रीति के अनुसार किया है । इन चारों आधारों के भी अन्य भेद पाये जाते हैं । कुछ क्रिया विशेषण वाक्य में स्वतंत्रतापूर्वक आते हैं और कुछ दूसरे वाक्य या शब्द की अपेक्षा रखते हैं । इसलिये प्रयोग के आधार पर क्रिया विशेषणों को वर्गीकृत किया जाता है । रूप के अनुसार क्रिया विशेषण का वर्गीकरण इसलिए किया गया है क्योंकि हिंदी में यौगिक क्रिया-विशेषणों की संख्या अधिक है जो बहुधा संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण या क्रिया विशेषण के अंत में विभक्तियों के लगाने से बनते हैं । क्रिया विशेषण का तीसरा वर्गीकरण अर्थ के अनुसार किया गया है । क्रिया के संबंध मे काल और स्थान की सूचना बडे ही महत्व की होती है । किसी भी घटना की सूचना बडे ही महत्व की होती है । किसी भी घटना का वर्णन काल और स्थान के ज्ञान के बिना अधूरा होता है अतः विशेषणों के अनुसार क्रिया-विशेषणों के भी दो भेद (गुण-संख्या) माने गये । इस तरह अर्थ के अनुसार क्रिया विशेषण के चार भेद - कालवाचक, रचनावाचक, परिमाणवाचक और रीतिवाचक माने गए है। उपर्युक्त सभी भेदों उपभेदों का विस्तार से विचार इस इकाई में किया गया है।

12.7 बोध - प्रश्न :

1. क्रिया विशेषण की परिभाषा लिखिए और उसके भेद सोदाहरण समझाइए।)
   (उत्तर : देखिए 12.2)
2. कालवाचक और स्थानवाचक क्रिया विशेषण का अन्तर स्पष्ट कीजिए।
   (देखिए : 12.3.3)
3. साधारण, सयोजक और अनुबद्ध क्रिया विशेषणों में क्या अन्तर है ? उदाहरण देकर स्पष्ट कीजिए ।
   (देखिए : 12.3.1)
4. मूल और यौगिक क्रिया विशेषण का अन्तर स्पष्ट कीजिए ।
   (देखिए 12.3.2)
5. स्थानीय क्रिया विशेषण का तात्पर्य क्या है । सोदाहरण समझाइए ।
   (देखिए 12.3.1)

12.8 सहायक ग्रंथ

1) हिन्दी व्याकरण - कामता प्रसाद गुरु
2) हिन्दी रूप रचना - आचार्य जयेन्द्र त्रिवेदी

ಆದೇಶ ಸಂಖ್ಯೆ : ಕರಾಮುವಿ/ಅಸಾವಿ/4-060/2013-2014 ದಿನಾಂಕ : 24-09-2013
ಒಳಪುಟ : 60 GSM MPM ವೈಟ್ ಪ್ರಿಂಟಿಂಗ್ ಪೇಪರ್ ಮತ್ತು ಹೊರಪುಟ: 170 GSM ಆರ್ಟ್‌ಕಾರ್ಡ್
ಮುದ್ರಕರು : ಅಭಿಮಾನಿ ಪಬ್ಲಿಕೇಷನ್ ಲಿ., ಬೆಂಗಳೂರು-10 ಪ್ರತಿಗಳು : 1,200

Karnataka State Open University

Manasagangotri Mysore - 570 006

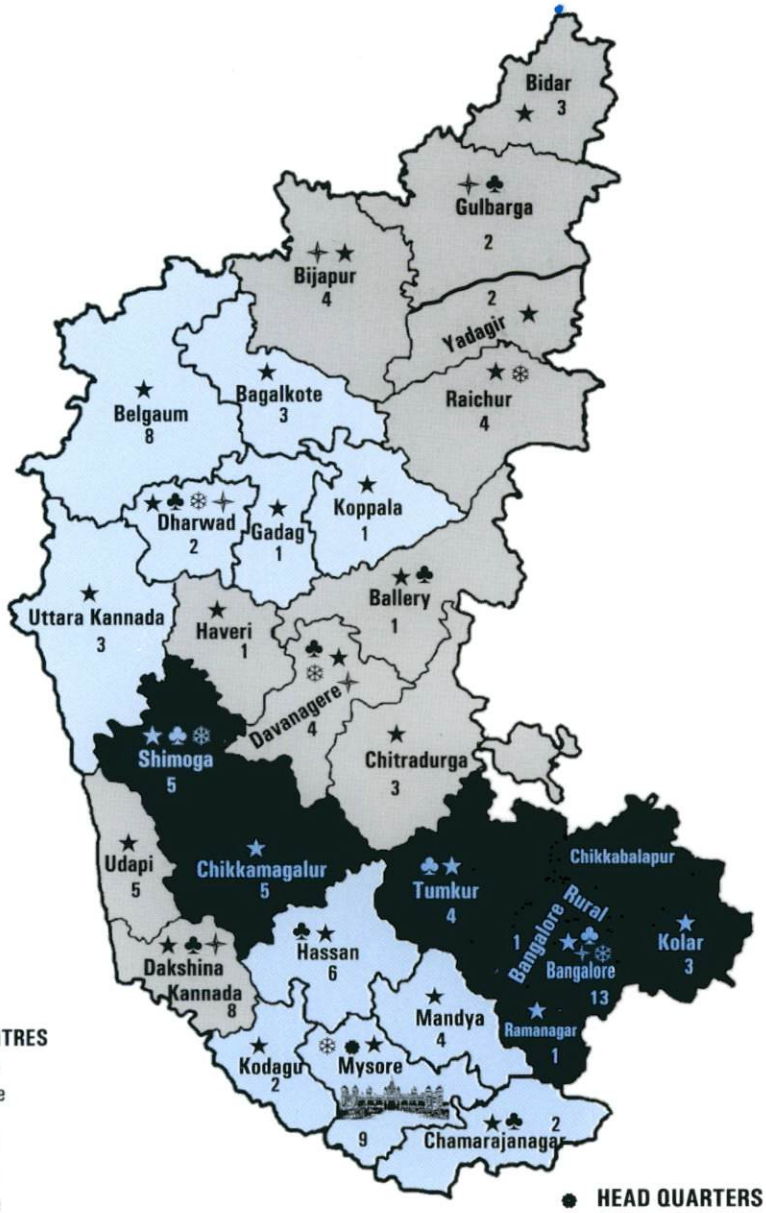

♣ **REGIONAL CENTRES**

Bangalore
Davanagere
Gulbarga
Dharwad
Shimoga
Mangalore
Tumkur
Hassan
Chamarajanagar
Bellary

● **HEAD QUARTERS**

★ **Total Study Centres : 111**

♣ **Regional Centres : 10**

❄ **B.Ed Study Centres : 10**

✦ **M.Ed Study Centres : 08**

Karnataka State Open University

Manasagangothri, Mysore - 570 006.

INSTRUCTIONAL SYSTEM